सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 119, नई दिल्ली, मंगलवार 08 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सहनशील होना अच्छी बात है... पर अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है...!!!

03 तुलसी 2.0 का धमाकेदार लुक आया सामने, फिर जिंदा हुई....

06 ब्रेन हेल्थ और एजिंग की समझ

08 एलन मस्क बनाम ट्रंप: आदर्शों की लड़ाई या निजी युद्ध?

खबर का असर : 25 जून 2025 को छपी खबर पर हुआ कुछ असर, सफाई हुई शुरू

पर क्या इससे जनजीवन सामान्य हो पाएगा और वाहनों को मिल पाएगी सही गति, बढ़ा सवाल ?

संजय बाटला

– संजय गांधी पशु चिकित्सा हस्पताल के करीब सड़क पर कूड़े का ढेर, कौन जिम्मेदार

नई दिल्ली। पंजाबी बाग वार्ड नंबर 92 में पड़ता है यह स्थान जहां से आम आदमी का निकलना है दूभर। इस के लिए क्षेत्र के निवासियों ने पिछले कई सालों से विधायक और नगर निगम पार्षद को अनगिनत बार मिलकर और लिखित में शिकायत दर्ज कराई हुई है पर शायद इस कालोनी की जनता की परेशानियों से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। यहां कार्यरत एनजीओ एवम् रेसिडेंशियल वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा भी इस मुद्दे पर कई शिकायतें दर्ज कराई गईं हैं पर धाक के तीन पात की तरह यह समस्या वहीं की वही खड़ी है।

यह कूड़े का ढेर किसी गली कुच्चे में नहीं अपितु मैन रॉड पर है जहां से 24 घंटे वाहनों का आना जाना लगा रहता हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है की इस क्षेत्र के डीएम का ऑफिस भी वहां से कुछ ही दूरी पर है और साथ ही होमगार्ड का मुख्यालय है। यह कूड़े का देर भगत सिंह कालोनी और होमगार्ड स्टफ कार्यालय के सामने स्थित है। इतना सब होने के बाद जनता को परेशानी का सीधा अर्थ समझ आता है की किसा नेता या बड़े सरकारी अधिकारी को जनता कि जान की चिंता ही नहीं है।

एक तो पूरे क्षेत्र की गंदगी का ढेर और उपर से हस्पताल में जानवरों को जलाने के कारण प्रदूषण। अब बताए यहां रहने और बसने वाली जनता किसका दरवाजा खटखटाए जब सरकारी अधिकारी और जनता के वोटो से जीते हुए नेता आंखों में पट्टी और कानों में रूई डाल कर बैठे हैं। इसी के साथ इस क्षेत्र में सीवर भी सदा भरे रहते है और ओवर होकर सड़को और गलियों में गंदे पानी को नदिया/ नाले की तरह बहाते नजर आते है।

"दिल्ली में आई बीजेपी सरकार से इस क्षेत्र के निवासियों को उम्मीद नजर आई थी पर बीजेपी का एमपी, एमएलए और निगम पार्षद के होते हुए उनकी मुसीबतों और परेशानियों में कमी आने की जगह बढ़ गई। अब सवाल यह उठता है की यहां रहने वाली जनता का भविष्य, स्वास्थ्य और सफाई किसके हाथों में है और कौन है इन सभी का जिम्मेदार।

क्या इन्हें इन परेशानियों से मिलेगा निजात और जिम्मेदार अधिकारियों और क्षेत्र में जीत कर पदों पर बैठे नेताओं पर होगी इस बाबत पूछताछ और कार्यवाही।

दिल्ली में बंद होगी केजरीवाल की 'पिंक टिकट योजना'

रेखा सरकार ने किया स्कीम में बड़ा बदलाव

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में महिलाओं के लिए स्मार्ट मोबिलिटी कार्ड योजना जल्द शुरू होगी। इससे बसों में यात्रा करना आसान होगा और पिंक टिकट का झंझट खत्म होगा। इस योजना का लक्ष्य किराया संग्रह को डिजिटल बनाना है। दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) ने बैंकों से रुचि पत्र आमंत्रित किए हैं। ये कार्ड गुलाबी टिकट प्रणाली की जगह लेंगे जिससे भ्रष्टाचार पर नियंत्रण होगा और महिलाएं सुरक्षित डिजिटल कार्ड का उपयोग कर सकेंगी।

नई दिल्ली। बसों में यात्रा करने वाली महिलाओं के लिए जल्द स्मार्ट मोबिलिटी कार्ड योजना शुरू होगी। इससे बसों में महिलाओं के लिए यात्रा आसान होगी। महिलाओं को पिंक टिकट लेने का झंझट खत्म होगा।

इस योजना का मकसद किराया संग्रह को डिजिटल बनाने और महिलाओं और ट्रांसजेंडर यात्रियों के लिए पारदर्शी यात्रा लाभ सुनिश्चित करना है। दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) ने नेशनल कामन मोबिलिटी कार्ड (एनसीएमसी) ढांचे के तहत स्मार्ट कार्ड शुरू करने के लिए बैंकों और वित्तीय संस्थानों से रुचि पत्र (ईओआई) आमंत्रित किए हैं।

पिंक टिकट योजना की जगह लेगी स्मार्ट कार्ड मोबिलिटी स्कीम

डीटीसी द्वारा प्रकाशित नोटिस के अनुसार केंद्र सरकार से सूचीबद्ध बैंक राजधानी में सभी सार्वजनिक परिवहन में उपयोग किए जा सकने वाले स्मार्ट कार्ड के माध्यम से यात्रा की सुविधा के लिए योजना में भाग ले सकते हैं। ये कार्ड बसों में मुफ्त यात्रा के लिए महिलाओं को दी जाने वाली मौजूदा 'पिंक टिकट' प्रणाली की जगह लेंगे।

बता दें कि मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने अपने बजट भाषण के दौरान महिलाओं को कागज़-आधारित गुलाबी टिकट जारी करने की पिछली प्रथा की आलोचना की थी और आरोप लगाया कि यह पिछली सरकार के तहत भ्रष्टाचार का एक बड़ा स्रोत था।

कागज आधारित टिकट से मिलेगी छुटकारा

उन्होंने घोषणा की थी कि नई प्रणाली महिलाओं को कागज-आधारित टिकटों पर निर्भर हुए बिना यात्रा करने की अनुमति देगी। महिलाएं अपनी पहचान से जुड़े सुरक्षित डिजिटल कार्ड का उपयोग कर सकेंगी।

दिल्ली भैरों मार्ग अंडरपास को लेकर बड़ा अपडेट, मंत्री प्रवेश वर्मा ने जल्द पूरा करने का किया वादा

दिल्ली के लोक निर्माण मंत्री प्रवेश वर्मा ने भैरों मार्ग रिंग रोड टी पॉइंट अंडरपास के निर्माण का निरीक्षण किया। उन्होंने बताया कि इंडिया गेट के पास बन रही टनल का 80% खर्चा आवासन एवं शहरी विकास मंत्रालय (MOHUA) द्वारा दिया जा रहा है। बाढ़ के कारण काम रुक गया था लेकिन अब इसे 8-9 महीने में पूरा करने का लक्ष्य है।

नई दिल्ली। दिल्ली में निर्माणाधीन भैरों मार्ग रिंग रोड टी पॉइंट अंडरपास के निरीक्षण के बाद लोक निर्माण मंत्री प्रवेश वर्मा ने कहा कि इंडिया गेट के पास जो टनल बनी है, भारत सरकार के आवासन एवं शहरी विकास मंत्रालय (MOHUA) के तहत यह कार्य हो रहा है। बताया कि 80 फीसदी फंडिंग वहां से मिल रही है और 20 फीसदी आईटीपीओ से फंड मिला है।

2023 में जो बाढ़ आई थी उसमें 10 बॉक्स जो बन रहे थे, उसके कारण काम रुक गया था, इसके बाद आईआईटी दिल्ली (IIT Delhi), आईआईटी मुंबई (IIT Mumbai) ने स्टडी किया, मगर कोई ऑप्शन नहीं निकला तो हम फिर से कम हाइट के तहत बनाएंगे। अभी आखिरी मीटिंग महुआ के साथ होनी है।

मंत्री प्रवेश वर्मा ने कहा अभी हम रेलवे लाइन के नीचे मौजूद हैं, जब तक यह काम नहीं होगा, यहां से गुजरने वाली ट्रेनों की स्पीड भी यहां पर कम रहेगी। पानी अंडरपास में दोबारा ना आए इसके लिए भी प्रिकॉशन लिए जा रहे हैं, हमे जैसे ही MOHUA से क्लेरेंस मिलती है तो हम इसे 8 से 9 महीने में पूरा कर देंगे जो कि एक बहुत बड़ा काम होगा।

इस काम को पीडब्ल्यूडी कर रही है। पिछली सरकार में काम लेट इसलिए होता था, क्योंकि कोई भी फॉलोअप नहीं होता था, कोई भी काम हो रहा है या नहीं हो रहा इसकी सरकार को कोई भी चिंता नहीं होती थी। हमने आने के बाद इसको फॉलो किया है।

बताया कि DDA, MOHUA, ITPO के साथ लगातार फॉलोअप रखा है, सारे डिपार्टमेंट के साथ हमारा फॉलोअप चल रहा है। पिछली सरकार ने बाढ़ को रोकने के लिए भी कोई कदम नहीं उठाए थे, लेकिन आप दिल्ली वासियों से हमारा वादा है कि कितनी भी बारिश हो दिल्ली में बाढ़ नहीं आएगी। भैरों मार्ग से सराय काले खां तक का रूट बनेगा और इससे आम जनता को काफी फायदा पहुंचेगा।

वहीं, मंत्री ने नंद नगरी गगन सिनेमा फ्लाईओवर के काम की भी मौके पर जाकर जानकारी ली। उनके साथ इलाके के सांसद मनोज तिवारी की मौजूद थे।

दिल्ली के रजिस्टर्ड वाहनों पर नहीं होगी कार्रवाई, 1 नवंबर से सिर्फ इन गाड़ियों पर होगा एक्शन; परिवहन विभाग ने किया साफ

दिल्ली परिवहन विभाग ने स्पष्ट किया है कि 1 नवंबर से दिल्ली में पंजीकृत मालवाहक वाहनों पर कोई कार्रवाई नहीं होगी। यह नियम केवल बीएस-VI मानकों का पालन न करने वाले बाहरी राज्यों के वाहनों पर लागू होगा। आवश्यक सेवाओं वाले वाहनों को 2026 तक छूट मिलेगी। यह कदम दिल्ली में प्रदूषण कम करने के प्रयासों का हिस्सा है।

नई दिल्ली: वाहनों पर कार्रवाई पर फैल रहे भ्रम पर परिवहन विभाग ने साफ किया है कि एक नवंबर से मालवाहक और ट्रांसपोर्ट वाहनों के मामले में कार्रवाई केवल दिल्ली से इतर राज्यों में रजिस्टर्ड वाहनों पर ही होगी।

दिल्ली के पंजीकृत वाहनों पर कार्रवाई नहीं होगी। दूसरे राज्यों के भी उन्हीं मालवाहक वाहनों पर कार्रवाई होगी, जो बीएस-VI के अनुरूप नहीं हैं। इन वाहनों में हल्के माल वाहक, मध्यम माल वाहक और भारी माल वाहक शामिल हैं।

दूसरे राज्यों के इन वाहनों को 31 अक्तूबर 2026 तक छूट

हालांकि दूसरे राज्यों में रजिस्टर्ड आवश्यक वस्तुओं को ढोने वाले, आवश्यक सेवाएं प्रदान करने वाले गैर बीएस-VI वाले ट्रांसपोर्ट व व्यावसायिक माल वाहनों को सीमित अवधि के लिए 31 अक्टूबर 2026 तक ही दिल्ली में प्रवेश करने की अनुमति दी जाएगी।

यहां बता दें कि एक नवंबर से दूसरे राज्यों के व्यावसायिक वाहनों को रोकने के लिए परिवहन विभाग तैयारी में जुटा है।

विभाग इसके लिए योजना बना रहा है। विभाग के अनुसार दिल्ली में प्रवेश करने वाले व्यावसायिक माल वाहनों से बढ़ते वायु प्रदूषण को रोकने के लिए कवायद शुरू की जा रही है। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने इसके लिए आदेश जारी किए हैं।

सीमाओं और टोल प्लाजा पर पालन होगा सुनिश्चित

सीएक्यूएम के अनुसार वाणिज्यिक वाहन, विशेषकर पुराने डीजल वाहन विशेषकर सर्दियों के दौरान दिल्ली-एनसीआर के वायु प्रदूषण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

यह निर्णय ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) के अनुरूप है, जो पहले से ही उच्च प्रदूषण वाले दिनों में प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाता है।

आयोग द्वारा दिल्ली और पड़ोसी राज्यों के परिवहन विभागों और यातायात पुलिस को निर्देश दिया जा चुका है कि वे स्वचालित नंबर प्लेट पहचान कैमरों से लैस सभी 126 सीमा प्रवेश बिंदुओं और 52 टोल प्लाजा पर इस आदेश का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जाए।

एनसीआर में बीएस-4 वाहनों पर 2010 से है प्रतिबंध

सीएक्यूएम के अनुसार सभी कार्यान्वयन एजेंसियों को तिमाही अनुपालन रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी। वाहनों के लिए बीएस-4 (भारत स्टेज 4) ईंधन श्रेणी को एक अप्रैल 2010 में दिल्ली एनसीआर में लागू किया गया था।

वाहनों के लिए बीएस-6 (भारत स्टेज 6) ईंधन श्रेणी 1 अप्रैल, 2020 से लागू हुई थी। इन मानदंडों का उद्देश्य वाहनों द्वारा उत्सर्जित प्रदूषकों की मात्रा को सीमित करना था,. ये मानदंड कार, बस, ट्रक और दोपहिया वाहनों सहित सभी वाहनों पर लागू होते हैं।

एक नवंबर से दूसरे राज्यों के इन वाहनों पर प्रतिबंध नहीं होगा

बीएस-VI अनुपालन वाले डीजल वाहन
सीएनजी (कंप्रेस्ड नेचुरल गैस) वाहन
एलएनजी (लिक्विफाइड नेचुरल गैस) वाहन
इलेक्ट्रिक वाहन (इलेक्ट्रिक व्हीकल्स)
दिल्ली में पंजीकृत व्यावसायिक वाहन

भौम प्रदोष व्रत आज

प्रदोष व्रत भगवान भोलेनाथ को समर्पित होता है। हर महीने की त्रयोदशी तिथि को प्रदोष व्रत रखा जाता है। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि पर आषाढ़ का अंतिम और जुलाई महीने का पहला प्रदोष व्रत रखा जाएगा। इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा की जाती है। देवों के देव महादेव अपने भक्तों की परेशानियां दूर करते हैं और उन्हें सुख समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं।

प्रदोष व्रत का शुभ मुहूर्त क्या है

======================
==

जुलाई में आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि 7 जुलाई को रात 11.11 बजे से 8 जुलाई को रात के 12.39 बजे तक रहेगी। प्रदोष काल में त्रयोदशी तिथि 8 जुलाई को होगी इसलिए 8 जुलाई, दिन मंगलवार को प्रदोष व्रत रखा जाएगा। मंगलवार होने की वजह से इसे भौम प्रदोष व्रत कहा जाएगा। इस दिन ज्येष्ठा उपरांत मूल नक्षत्र का संयोग रहेगा। इसके साथ ही शुक्ल योग का निर्माण होगा। चंद्रमा वृश्चिक उपरांत धनु राशि में गोचर करेंगे जबकि शुक्र ग्रह का रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश होगा।

प्रदोष व्रत का महत्व

=================

प्रदोष व्रत रखने से भगवान शिव प्रसन्न होते हैं। इससे वैवाहिक जीवन में सुख शांति रहती है। संतान सुख मिलता है। इसके साथ ही दुख परेशानियों से छुटकारा मिलता है। भगवान शिव और माता पार्वती के आशीर्वाद से प्रदोष व्रत रखने वाले के घर आंगन में हमेशा खुशियां बनी रहती हैं। प्रदोष व्रत के मौके पर रुद्राभिषेक करना अधिक पुण्यदायी माना जाता है।

प्रदोष व्रत की पूजा विधि

==================

प्रदोष व्रत वाले दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि के बाद साफ कपड़े पहनें। इसके बाद भगवान शिव का ध्यान करें और व्रत का संकल्प लें। इसके बाद घर के मंदिर में शिव-पार्वती का विधि विधान के साथ पूजन करें। उन्हें स्नान कराएं। गंगाजल से अभिषेक करें। रोली, चंदन लगाएं। धूप, दीप, नैवेद्य समर्पित करें। फूल और भोग अर्पित करें। इसके बाद भगवान शिव के मंत्रों का जप करें। फिर प्रदोष व्रत की कथा का पाठ करें। इसके बाद शिव-पार्वती की आरती करें। पूजन के दौरान जाने अनजाने में हुई गलतियों के लिए क्षमा मांगें। इसके बाद पूजा का प्रसाद घर पर बांटें।

अलसी बीज खाने के क्या फायदे हैं ?

अत्यधिक मोटापा शरीर के लिए घातक होता है। शरीर का अधिक मोटा होना मतलब डायबिटीज, ह्रदय रोग का जोखिम होना है। ऐसे में लोगो को अपना वजन संतुलित करना आना चाहिए।

हालांकि कई लोग अपने कामो में इतना व्यस्त रहते है अपने खान -पान और शारीरिक गतिविधि पर ध्यान नहीं देते है।

यही कारण है शरीर को प्रोटीन नहीं मिलता है और शरीर फिट नहीं रहती है। इसलिए मोटापा बढ़ता है और व्यक्ति बीमार पड़ने लगता है।

बहुत से मोटापा कम करने के लिए अनेको घरेलु उपाय की तलाश करते है आपको बता दे अलसी के बीज वजन करने के लिए बहुत उपयोगी माना जाता है। अपने आहार में अलसी बीज के पाउडर का उपयोग करना चाहिए।

वजन घटाने के लिए अलसी के बीज फायदेमंद होते है। इसमें एंटी ऑक्सीडेंट व ओमेगा 3 फैटिक एसिड, फाइबर मौजूद होता है जो शरीर की अतिरिक्त वसा को घटाने में मदद करता है। चलिए आगे बताते है अलसी के बीज वजन घटाने में फायदेमंद हो सकता है।

लीग्रीन - सब्जियों व बीजो में लिगनेन अच्छी मात्रा में मौजूद होता है। अलसी के बीज में कई गुना अधिक लिगनेन है जो एंटीऑक्सीडेंट के रूप में काम करते है। शरीर के हानिकारक कणो को समाप्त कर वजन कम करने में मदद करते है।

ओमेगा 3 फैटी एसिड का अच्छा स्त्रोत - अलसी के बीज में ओमेगा 3 फैटी एसिड मौजूद होता

है। यह वजन घटाने में मदद करते है और शरीर में चर्बी का जमाव नहीं होता है जिससे वजन नियंत्रण में रहता है।

प्रोटीन - अलसी के बीज में भरपूर मात्रा में पोषक तत्व और प्रोटीन होता है। इसमें प्रोटीन होता है और घुलनशील फाइबर होता है जो भूख की कमी करता है यानि जल्दी भूख नहीं लगती है। इस प्रक्रिया से व्यक्ति अधिक नहीं खाता है और वजन नियंत्रण में करता है।

डायटरी फाइबर - अलसी के बीज में अच्छी मात्रा में डायटरी फाइबर होता है जो वजन कम करने में मदद करता है। कुछ अध्ययन के अनुसार रोजाना अलसी के बीज एक चम्मच लेने से

शरीर में जमा फैट कम होने लगते है। यह केवल वजन नहीं कम करते है बल्कि डायबिटीज, बीपी, ह्रदय रोग का जोखिम कम करता है। अपने भोजन में फाइबर युक्त चीजे जरूर शामिल करें।

चातुर्मास में वर्ष के चार महीने आते हैं सावन, भादों, क्वार, कार्तिक। (श्रावण, भाद्र, अश्विन, कार्तिक-मास)

चातुर्मास से जुड़ी पौराणिक कथा

===≈=======≈≈≈≈≈≈≈==

शास्त्रों के अनुसार राजा बलि ने तीनों लोकों पर अधिकार कर लिया। घबराए इंद्रदेव व अन्य सभी देवताओं ने जब भगवान विष्णु से सहायता मांगी तो श्री हरि ने वामन अवतार लिया और राजा बलि से दान मांगने पहुंच गए। वामन भगवान ने दान में तीन पग भूमि मांगी। दो पग में भगवान ने धरती और आकाश नाप लिया और तीसरा पग कहां रखे जब यह पूछा तो बलि ने कहा कि उनके सिर पर रख दें। इस तरह बलि से तीनों लोकों को मुक्त करके श्री नारायण ने देवराज इंद्र का भय दूर किया। लेकिन राजा बलि की दानशीलता और भक्ति भाव देखकर भगवान विष्णु ने बलि से वर मांगने के लिए कहा। बलि ने भगवान से कहा कि आप मेरे साथ पाताल चलें और हमेशा वहीं निवास करें। भगवान विष्णु ने अपने भक्त बलि की इच्छा पूरी की और पाताल चले गए। इससे सभी देवी-देवता और देवी लक्ष्मी चिंतित हो उठी।

देवी लक्ष्मी ने भगवान विष्णु को पाताल लोक से मुक्त कराने लिए एक युक्ति सोची और एक गरीब स्त्री बनकर राजा बलि के पास पहुँच गईं। इन्होंने राजा बलि को अपना भाई मानते हुए राखी बांधी और बदले में भगवान विष्णु को पाताल से मुक्त करने का वचन मांग लिया। भगवान विष्णु अपने भक्त को निराश नहीं करना चाहते थे इसलिए बलि को वरदान दिया कि वह साल आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक पाताल लोक में निवास करेंगे, इसलिए इन चार महीनों में भगवान विष्णु योगनिद्रा में रहते हैं।

चातुर्मास के नियम एवं फल

~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एक दण्डी तथा त्रिदंडी सभी के लिए ही चातुर्मास व्रत करणीय है अर्थात एक दंडी -ज्ञानीगण तथा त्रिदंडी भक्त गण दोनों ही चातुर्मास व्रत का पालन करते हैं। श्री शंकर मठ के अनुयायियों में भी चातुर्मास व्रत की व्यवस्था है।

मनुष्य एक हजार अश्वमेध यज्ञ करके मनुष्य जिस फल को पाता है, वही चातुर्मास्य व्रत (17 जुलाई से 15 नवंबर) के अनुष्ठान से प्राप्त कर लेता है।

आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में एकादशी के दिन उपवास करके मनुष्य भक्तिपूर्वक चातुर्मास्य व्रत प्रारंभ करे।

इन चार महीनों में ब्रह्मचर्य का पालन, त्याग, पत्तल पर भोजन, उपवास, मौन, जप, ध्यान, स्नान, दान, पुण्य आदि विशेष लाभप्रद होते हैं।

व्रतों में सबसे उत्तम व्रत है – ब्रह्मचर्य का पालन। विशेषतः चतुर्मास में यह व्रत संसार में अधिक गुणकारक है। जो चतुर्मास में अपने प्रिय भोगों का श्रद्धा एवं प्रयत्नपूर्वक त्याग करता है, उसकी त्यागी हुई वे वस्तुएँ उसे अक्षय रूप में प्राप्त होती हैं।

चतुर्मास में गुड़ का त्याग करने से मनुष्य को मधुरता की प्राप्ति होती है।

ताम्बूल का त्याग करने से मनुष्य भोग-सामग्री से सम्पन्न होता है और उसका कंठ सुरीला होता है।

दही छोड़ने वाले मनुष्य को गोलोक मिलता है। नमक छोड़ने वाले के सभी पूर्तकर्म (परोपकार एवं धर्म सम्बन्धी कार्य) सफल होते हैं।

जो मौनव्रत धारण करता है उसकी आज्ञा का कोई उल्लंघन नहीं करता।

चतुर्मास में काले एवं नीले रंग के वस्त्र त्याग देने चाहिए। कुसुम्भ (लाल) रंग व केसर का भी त्याग कर देना चाहिए।

आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी 17 जुलाई को श्रीहरि के योगनिद्रा में प्रवृत्त हो जाने पर मनुष्य चार मास अर्थात् कार्तिक की पूर्णिमा 15 नवंबर तक भूमि पर शयन करे। ऐसा करने वाला मनुष्य बहुत से धन से युक्त होता और विमान प्राप्त करता है।

जो भगवान जनार्दन के शयन करने पर शहद का सेवन करता है, उसे महान पाप लगता है। चतुर्मास में अनार, नींबू, नारियल तथा मिर्च, उड़द और चने का भी त्याग करे।

चातुर्मास्य में परनिंदा का विशेष रूप से त्याग करे। परनिंदा को सुनने वाला भी पापी होता है।

चतुर्मास में ताँबे के पात्र में भोजन विशेष रूप से त्याज्य है। काँसे के बर्तनों का त्याग करके मनुष्य अन्यान्य धातुओं के पात्रों का उपयोग करे। अगर कोई धातुपात्रों का भी त्याग करके पलाशपत्र, मदारपत्र या वटपत्र की पत्तल में भोजन करे तो इसका अनुपम फल बताया गया है।

अन्य किसी प्रकार का पात्र न मिलने पर मिट्टी का पात्र ही उत्तम है अथवा स्वयं ही पलाश के पत्ते लाकर उनकी पत्तल बनाये और उससे भोजन-पात्र का कार्य ले। पलाश के पत्तों से बनी पत्तल में किया गया भोजन चान्द्रायण व्रत एवं एकादशी व्रत के समान पुण्य प्रदान करने वाला माना गया है।

प्रतिदिन एक समय भोजन करने वाला पुरुष अग्निष्टोम यज्ञ के फल का भागी होता है।

पंचगव्य सेवन करने वाले मनुष्य को चान्द्रायण व्रत का फल मिलता है।

यदि धीर पुरुष चतुर्मास में नित्य परिमित अन्न का भोजन करता है तो उसके सब पातकों का नाश हो जाता है और वह वैकुण्ठ धाम को पाता है। चतुर्मास में केवल एक ही अन्न का भोजन करने वाला मनुष्य रोगी नहीं होता।

जो मनुष्य चतुर्मास में केवल दूध पीकर अथवा फल खाकर रहता है, उसके सहस्रों पाप तत्काल विलीन हो जाते हैं।

जो चतुर्मास में भगवान विष्णु के आगे खड़ा होकर 'पुरुष सूक्त' का पाठ करता है, उसकी बुद्धि बढ़ती है। कैसा भी दबू विद्यार्थी हो बुद्धिमान बनेगा चतुर्मास सब गुणों से युक्त समय है। इसमें धर्मयुक्त श्रद्धा से शुभ कर्मों का अनुष्ठान करना चाहिए।

देवशयनी एकादशी 17 जुलाई से देवउठनी एकादशी 12 नवम्बर तक उक्त धर्मों का साधन एवं नियम महान फल देने वाला है।

चतुर्मास में भगवान नारायण योगनिद्रा में शयन करते हैं, इसलिए चार मास शादी-विवाह और सकाम यज्ञ नहीं होते। ये मास तपस्या करने के हैं।

चतुर्मास में योगाभ्यास करने वाला मनुष्य ब्रह्मपद को प्राप्त होता है।

'नमो नारायणाय' का जप करने से सौ गुने फल की प्राप्ति होती है।

यदि मनुष्य चतुर्मास में भक्तिपूर्वक योग के अभ्यास में तत्पर न हुआ तो निःसंदेह उसके हाथ से अमृत का कलश गिर गया।

जो मनुष्य नियम, व्रत अथवा जप के बिना चौमासा बिताता है वह मूर्ख है।

चतुर्मास में विशेष रूप से जल की शुद्धि होती है। उस समय तीर्थ और नदी आदि में स्नान करने का विशेष महत्त्व है।

नदियों के संगम में स्नान के पश्चात पितरों एवं देवताओं का तर्पण करके जप, होम आदि करने से अनंत फल की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य जल में तिल और आँवले का मिश्रण अथवा बिल्वपत्र डालकर ॐ नमः शिवाय का चार-पाँच बार जप करके उस जल से स्नान करता है, उसे नित्य महान पुण्य प्राप्त होता है।

चतुर्मास में अन्न, जल, गौ का दान, प्रतिदिन वेदपाठ और हवन – ये सब महान फल देने वाले हैं।

सद्धर्म, सत्कथा, सत्पुरुषों की सेवा, संतों के दर्शन, भगवान विष्णु का पूजन आदि सत्कर्मों में संलग्न रहना और दान में अनुराग होना – ये सब बातें चतुर्मास में दुर्लभ बतायी गयी हैं।

चतुर्मास में दूध, दही, घी एवं मट्ठे का दान महाफल देने वाला होता है।

जो चतुर्मास में भगवान की प्रीति के लिए विद्या, गौ व भूमि का दान करता है, वह अपने पूर्वजों का उद्धार कर देता है।

विशेषतः चतुर्मास में अग्नि में आहूति, भगवद् भक्त एवं पवित्र ब्राह्मणों को दान और गौओं की भलीभाँति सेवा, पूजा करनी चाहिए।

चतुर्मास में जो स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय और देवपूजन किया जाता है, वह सब अक्षय हो जाता है।

जो एक अथवा दोनों समय पुराण सुनता है, वह पापों से मुक्त होकर भगवान विष्णु के धाम को जाता है।

*जो भगवान के शयन करने पर विशेषतः उनके नाम का कीर्तन और जप करता है, उसे कोटि गुना फल प्राप्त होता है

राजनैतिक व्यंग्य-समागम : अवार्ड तो लाने दो यारो !

1. अवार्ड तो लाने दो यारो! : राजेन्द्र शर्मा

भगवा भाईयों ने भी मोदी जी के विरोधियों को वो मुंह तोड़ जवाब दिया है कि पूछो ही मत। एक-एक गिनकर, साल-महीनावार पूरी लिस्ट बनाकर बता दिया है कि मोदी जी को परदेस में कब-कब, कहां-कहां और कौन-कौन से अवार्ड मिले हैं। और यह भी कि मोदी जी से पहले वाले प्रधानमंत्रियों को परदेस में कितने थोड़े अवार्ड मिले थे।

कोई तुलना ही नहीं है भाई साहब। परदेसी अवार्डों में पहले वाले, मोदी का पासंग भी नहीं बैठेंगे। जिन नेहरू जी का इतना शोर सुनते थे कि दुनिया पता नहीं उन्हें कितना मानती थी, कि दुनिया उन्हें गुटनिरपेक्ष आंदोलन के पिताओं में गिनती थी, उन्हें दो, जी हां ठीक सुना, फकत दो विदेशी अवार्ड मिले थे।

और जिन इंदिरा गांधी ने कहते हैं कि दक्षिण एशिया का नक्शा बदल दिया और अमरीका को अपने ठेंगे पर रखा, उन्हें भी ले-देकर सिर्फ दो विदेशी अवार्ड मिले थे।

और राजीव गांधी को तो एक भी विदेशी अवार्ड नहीं मिला, बोफोर्स की तोप की बदनामी और श्रीलंका में हमले के सिवा।

और अपने मोदी जी? सत्तर साल में भारत के सारे प्रधानमंत्रियों को मिलाकर भी जितने अवार्ड मिले होंगे, उससे कम से कम तीन गुना ज्यादा अवार्ड तो अब तक अपने मोदी जी की झोली में आ भी चुके हैं। जी हां ठीक सुना, पूरे चौबीस-पच्चीस अवार्ड। और अवार्ड मिलने का सिलसिला न सिर्फ लगातार जारी है, बल्कि तेज से तेज ही होता जा रहा है। पांच देशों की आठ दिन की यात्रा पर निकले मोदी जी, घाना और ट्रिनिडाड-टोबैगो से, दो अवार्ड तो अब तक बटोर भी चुके हैं, जबकि तीन देशों का दौरा अभी बाकी ही है। फिर मोदी जी के तीसरे कार्यकाल का दूसरा साल तो अभी शुरू ही हुआ है। ग्यारह साल में पच्चीस यानी साल में सिर्फ सवा दो विदेशी अवार्ड का औसत रहे तब भी, तीसरे कार्यकाल के अंत तक मोदी जी, तीन दर्जन तक तो आंकड़ा पहुंचा ही देंगे।

उड़ती-उड़ती खबर तो यह भी सुनने को मिली है कि मोदी जी अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड बटोरने का विश्व रिकार्ड तो चालू विदेश यात्रा शुरू होने से बहुत पहले ही तोड़ चुके थे। सच पूछिए तो कोई कंपटीशन तो है ही नहीं। अब तो बस मोदी जी अपना रिकार्ड इतना बड़ा करने में लगे हुए हैं कि उसे बाद में कोई, कभी भी न तोड़ पाए।

अब इससे बढ़कर इसका सबूत क्या होगा कि दुनिया भारत को विश्व गुरु और मोदी जी को विश्व सम्राट मान चुकी है। पर हमें पता है कि जलकुकड़े विरोधी अब भी नहीं मानेंगे। उल्टे वे तो मोदी जी के इतने सारे अवार्ड बटोरने का ही मजाक उड़ा रहे हैं। कह रहे हैं कि यह सम्मान पाना नहीं, यह तो अवार्ड वसूली है। मोदी जी छोटे-छोटे देशों को अपने दौरे के फायदे बताते हैं, फिर दौरे के लिए अवार्ड दिए जाने की शर्त लगाते हैं; इस तरह खोज-खोजकर ऐसे देशों से और ऐसे-ऐसे अवार्ड लाते हैं, जिनके नाम किसी ने सुने भी नहीं होते हैं।

लेकिन, यह सब झूठ है। चौबीस-पच्चीस अवार्ड की इस गिनती में मोदी जी ने कोटलर अवार्ड को तो गिना तक नहीं है। सुनते हैं कि पहला और आखिरी कोटलर अवार्ड किसी चालू हिंदुस्तानी ने ही मोदी जी को पकड़ा दिया था। मोदी जी की भी बात सही है, विदेशी नहीं, तो अवार्ड नहीं। वर्ना कौन सा देसी अवार्ड है, जो खुद-ब-खुद मोदी जी के चरणों में आकर नहीं गिर गया होता। मोदी जी चाहते तो हर रोज अवार्ड लेते, बल्कि दिन में तीन-तीन बार। दिन में जितनी पोशाकें, उतने अवार्ड। जो गिनती अब तक दर्जनों में ही पहुंची है, हजारों में पहुंच जाती।

इतने अवार्ड हो जाते, इतने अवार्ड हो जाते कि मोदी जी के नये बनने वाले महल में भी सजाकर रखने के लिए जगह कम पड़ जाती। बहुत से अवार्ड तो महल के कोनों में, ताखों पर, आलों में, शैया के नीचे पड़े रहते। राष्ट्रीय संग्रहालय की सभी दीर्घाओं में सिर्फ मोदी जी के अवार्ड रहते।

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। क्योंकि मोदी जी चाहते ही नहीं हैं कि ऐसा कुछ भी हो। परदेसी अवार्डों के साथ, देसी अवार्डों की मिलावट मोदी जी नहीं चाहते। देसी अवार्ड में चुनाव की जीत ही काफी है! चुनाव आयोग छठे-छमाहे तो मोदी जी को यह अवार्ड भी देता ही रहता है। अभी फरवरी में दिल्ली में दिया था। अब साल के आखिर में बिहार में देने की पूरी तैयारी है। इसके लिए करोड़ों वोटरों को चाहे 'हैं' से 'थे' करना पड़ जाए, चाहे मतदाता सूचियों में कितनी ही काट-छांट करनी पड़ जाए, पर जीत का अवार्ड मोदी जी को ही दिया जाएगा। आखिर, देश की इज्जत तो चुनाव आयोग के ही हाथ में है। मोदी जी को अगर जीत का अवार्ड भी नहीं दिया, तो दुनिया क्या कहेगी? जिसे खुद भारत वाले गद्दी का अवार्ड देने में हिचक रहे हों, उसे बाकी दुनिया विश्व गुरु का पद कैसे देगी!

बेशक, मोदी जी के विरोधियों का परदेसी अवार्डों में छोटे-बड़े की बात करना, जान-बूझकर मोदी जी के नये भारत को बदनाम करना है। वर्ना यह तो मोदी जी की महानता है कि वह परदेस के मामले में एकदम समदर्शिता बरतते हैं। दूसरे देशों के बीच छोटा-बड़ा नहीं देखते हैं। और अपने सामने छोटा-बड़ा तो खैर बिल्कुल ही नहीं देखते हैं। छोटे से छोटे देशों के, दूसरे-तीसरे नंबर के अवार्डों से भी उतना ही प्रेम करते हैं, जितना कोई और बड़े देशों के नंबर एक के अवार्डों का करता होगा।

जैसे भगवान प्रेम के भूखे बताए जाते हैं, मोदी जी बस विदेशी अवार्ड के भूखे हैं। छोटा-बड़ा नहीं देखते हैं, न देने वाले देश में और न मिलने वाले अवार्ड में। और क्यों देखें छोटा-बड़ा? आखिर, तमगा सोने का हो, चांदी का हो, पीतल का हो, मोदी जी कुछ न कुछ तो भारत में ला ही रहे हैं। हम तो कहेंगे कि वे भारत के गौरव के विरोधी हैं, जो मोदी जी के अवार्डों को देने वाले देश के आकार या अवार्ड के क्रमांक के हिसाब से नापने की कोशिश करते हैं। मोदी जी पक्के जनतंत्रवादी हैं, उनका नजरिया एकदम स्पष्ट है; जब चुनाव में सारा महत्व संख्या का होता है, तो क्या विश्व सम्राट के चुनाव में अवार्डों की संख्या का ही महत्व नहीं होगा?

(राजेन्द्र शर्मा वरिष्ठ पत्रकार और 'लोकलहर' के संपादक हैं।)

****

२. छप्पन इंची जी की संघर्ष गाथा : विष्णु नागर

भाजपा को चूंकि इस सदी का सबसे बड़ा ड्रामेबाज उपलब्ध है, तो उसके लिए हर घटना, हर प्रसंग महज़ एक ड्रामा है। आपातकाल के पचास वर्ष पूरे होने का दिन, २५ जून भी एक ड्रामाई दिन था। छप्पन इंची जी को राहुल गांधी से बेहद खतरा महसूस होता है, इसलिए ड्रामा करना जरूरी था, वरना रास्ता तो छप्पन जी का भी वही है, जो आपातकाल में इंदिरा गांधी का था बल्कि उससे भी बहुत अधिक खतरनाक है और 11 साल से मुसलसल उसी पर चल रहे हैं। तो २५ जून को छप्पन इंची जी चोला बदलकर लोकतांत्रिक हो गए थे। उन्हें कुछ भी होने और बनने में समय नहीं लगता। जैसे दिन में वह छह ड्रेस बदलते हैं, उसी तरह एक दिन में वह बारह तरह की बात कहने में उस्ताद हैं। विचार भी उनके लिए कुर्ता -पजामा और जैकेट है।

तो उस दिन कई काम किए गए। कैबिनेट की बैठक हुई कि आपातकाल विरोधी प्रस्ताव पारित करना है। लोकतंत्र और संविधान की दुहाइयां दी गईं। इसे 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाकर अपने को संविधान का रक्षक बनाया। अमित शाह से लेकर छुटभईयों तक ने आपातकाल की उस दिन खूब मलामत की और मोदी जी ने आपातकाल पीड़ितों के परिवारजनों से अपने अनुभव साझा करने को कहा। और इस तरह यह ड्रामा शाम से पहले खत्म हुआ।उसके बाद नया अभियान शुरू हुआ कि संविधान से समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता शब्द हटाओ। देश को हिंदू राष्ट्र बनाओ।

मोदियों और शाहों को अगर उस दिन आपातकाल की बहुत ही याद आ रही थी, तो उन्हें यह भी तो स्मरण होगा कि जिस संघ पर इंदिरा गांधी ने प्रतिबंध लगाया था, उसी के प्रमुख बालासाहेब देवरस प्रधानमंत्री जी की चिरौरियां कर रहे थे। चिट्ठियों पर चिट्ठियां लिख रहे थे। संजय गांधी से भी मिलने के लिए छटपटा रहे थे। यहां तक कह रहे थे कि हमारा कोई संबंध जयप्रकाश नारायण के आंदोलन से नहीं है। बीस सूत्री कार्यक्रम का समर्थन कर रहे थे। नसबंदी तक को अपना समर्थन दिया था -- खासकर मुसलमानों की! हार-थककर देवरस जी ने विनोबा भावे से भी चिरौरी की थी कि इंदिरा जी आपसे मिलने पवनार आश्रम आ रही हैं, तो जरा उनसे संघ के बारे में भ्रम दूर कर दीजिएगा। सुप्रीम कोर्ट की संवैधानिक पीठ ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले को रद्द करते हुए रायबरेली से इंदिरा गांधी के चुनाव को वैध ठहराया, तब भी संघ प्रमुख ने इसकी ताईद की। आपातकाल के बाद 1975 में स्वतंत्रता दिवस पर इंदिरा गांधी ने लालकिले से जो राष्ट्र को संबोधन किया, उसे भी उन्होंने 'संतुलित' और 'समयानुकूल' बताया, मगर इनमें से कोई भी तरकीब काम नहीं आई। सब फेल हो गईं। अपने पिता की तरह इंदिरा जी संघ का चरित्र खूब जानती थीं। तो आपातकाल के विरोध में भाजपा की मातृसंस्था का यह महान योगदान था, जिस पर मोदी जी को गर्व है!

और भी सुनिए। इनकी पार्टी के एक बड़े नेता तो आपातकाल को अस्पताल में आराम फरमाकर बिताया।इनके अधिकतर कार्यकर्ता भी एक-दो महीने में माफी मांगकर छूट गए और अब अनेक राज्यों में दस से बीस हजार तक पेंशन पा रहे हैं। इनके नेता जरूर जेल में रहे, मगर ठाठ से राजनीतिक कैदी की तरह। मोदी जी से उम्र में छोटे, मगर बाद में उनके परम मित्र रहे अरुण जेटली जी तथा उनके वरिष्ठ मंत्री राजनाथ सिंह भी तब जेल गए थे, मगर मोदी जी कभी नहीं गए। दूसरों को भिजवाते हैं, मगर खुद एक बार भी नहीं गए। मगर आज बताया जा रहा है कि आपातकाल से लड़ने वाला असली शूरवीर अगर तब कोई था, तो मोदी जी थे!मोदी जी के बायोडाटा में एक यह कमी रह गई थी, वह भी अब पूरी हो गई है। वैसे तो वह बीए-एमए भी हैं, मगर किस तरह हैं,सब जानते हैं।

किसी दिन अगर उनके बायोडाटा में यह भी शामिल हो जाए कि उन्होंने आजादी की लड़ाई लड़ी थी, तो भी आश्चर्य नहीं होना चाहिए, क्योंकि वह नान बायोलॉजिकल हैं! जो नान बायोलॉजिकल राम जी को ऊंगली पकड़कर अयोध्या के मंदिर में ला सकता है, वह कभी भी, कहीं भी, कुछ भी हो सकता है!

छप्पन इंची जी की आपातकाल की कथित संघर्ष गाथा पर एक पूरी किताब अंग्रेजी में आई है, जिसका नाम है- 'द इमर्जेंसी डायरीज़ -- ईयर्स दैट फोर्ज्ड अ लीडर'। मतलब आपातकाल ने ही हमें मोदी जैसा महान नेता दिया। अभी तो पूरी बात सामने आई नहीं है, मगर जब आएगी, तो यह पुस्तक भी 'बाल नरेन्द्र' साबित होगी।इसके अलावा कुछ हो भी नहीं सकती। जिस वीर बालक ने मगरमच्छों के बीच से नदी में पड़ी गेंद निकाल ली थी और जो मगरमच्छ के बच्चे को घर ले आया था, वह बच्चा आगे चलकर इससे भी अधिक वीर साबित होना ही है, यह स्पष्ट है। तभी तो वह प्रधानमंत्री के रूप में छप्पन इंच सीने की गति को प्राप्त हुए!

यह किताब अंधभक्तों की अंधभक्ति में कितनी वृद्धि करेगी, यह तो नहीं मालूम, मगर जिनकी आंखें हैं और खुली हैं, उन्हें अगले अनेक वर्षों के लिए मनोरंजन की नयी सामग्री उपलब्ध करवाएगी। अमित शाह ने जो थोड़ा-बहुत इस बारे में बताया है, वह यह है कि छप्पन इंची जी, तब तरह-तरह के भेस बदलकर आपातकाल के पीड़ितों के परिवारों की मदद करते थे। वह कभी साधु बन जाते थे, कभी सरदार जी, कभी अगरबत्ती विक्रेता, तो कभी हिप्पी! जिसने प्रधानमंत्री बनकर भी अपने अलावा किसी की मदद नहीं की, वह आपातकाल में इतना बहादुर होने के साथ इतना परम जन हितैषी रहा होगा, इस पर तो आज के बच्चे भी मुश्किल से विश्वास करेंगे, क्योंकि वे इस उम्र में हमारी-आपकी तरह गावदू नहीं हैं। बहुत स्मार्ट हैं और ऐसे -ऐसे सवाल करते हैं कि अच्छों-अच्छों के पसीने छूट जाते हैं। अच्छों-अच्छों में माननीय जी भी शामिल हैं।

(कई पुरस्कारों से सम्मानित विष्णु नागर साहित्यकार और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

प्रश्न आया है कि प्रतिक्रमण क्या होता है? हमारा चित्त क्षण-क्षण बदलता रहता है। अभी निर्मल अवस्था में है, इस समय राग नहीं है, द्वेष नहीं है, मोह नहीं है।

क्षण भर बिता नहीं कि कहीं कोई संवेदना जागी, दुखद संवेदना जागी कि द्वेष करने लगे। सुखद संवेदना जागी कि राग करने लगे तो हम अपनी निर्मलता से अतिक्रमण कर गये। अपनी शुद्धता की सीमा से आगे बढ़ गये। होश आते ही, फिर प्रतिक्रमण करने लगे। तत्क्षण होश आया कि नहीं, राग नहीं, वीतराग अवस्था में रहना है। द्वेष नहीं, वीतद्वेष अवस्था में रहना है। मोह नहीं, वीतमोह अवस्था में रहना है। तो यही प्रतिक्रमण हुआ। प्रतिक्रमण की विद्या/विधि यही है कि इस देह के भीतर, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, आड़े-तिरछे सर्वत्र जो भी हो रहा है, वह हम जानते रहें कि वह सब मृत्यमय है। यह अनित्य है। यह नश्वर है। यह भंगुर है। यह परिवर्तनशील है। कहीं इसके प्रति आसक्ति न हो जाये। कहीं इसके प्रति राग न हो जाये। हमारा यही निरंतर होश/ध्यान, हमें प्रत्येक परिस्थिति में समता स्थापित करने में सहायक/साधक बन जाता है। धीरे-धीरे यह होश गहराने लगेगा, और हम अपनी स्वचालित बेहोश गतिविधियों की दलदल से विमुक्त होने लगेंगे।
~~~~~~~~~~~~~~~~~~

लगातार 12वें दिन हवा रही साफ, दिल्ली में इस साल 'क्लीन एयर' का सबसे लंबा दौर

दिल्ली में वायु गुणवत्ता लगातार 12वें दिन संतोषजनक श्रेणी में रही। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार सोमवार को एक्यूआई 85 दर्ज किया गया। मौसम की मेहरबानी से एनसीआर के शहरों में भी हवा की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। ओखला विहार में नए नलकूप लगने से पानी की समस्या भी दूर होगी।

नई दिल्ली। सोमवार को लगातार 12वें दिन दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 'संतोषजनक' श्रेणी में रहा, जो इस साल अब तक का सबसे लंबा साफ दौर रहा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार सोमवार को का एक्यूआई 85 दर्ज किया गया। 25 जून को यह 134 (मध्यम श्रेणी) से गिरकर 26 जून को 94 (संतोषजनक) श्रेणी में पहुंचने के बाद पिछले 12 दिनों से 100 से नीचे बना हुआ है।

एनसीआर के शहरों में भी यही स्थिति बनी हुई है। मौजूदा मौसमी परिस्थितियों के बीच अभी इसके इसी श्रेणी में रहने की संभावना है। इसमें मौसम की मेहरबानी भी एक बड़ा रोल अदा कर रही है।

मालूम हो कि सीपीसीबी के अनुसार, शून्य से 50 के बीच एक्यूआई को "अच्छा", 51 से 100 को "संतोषजनक", 101 से 200 को "मध्यम", 201 से 300 को "खराब", 301 से 400 को "बहुत खराब" और 401 से 500 को "गंभीर" माना जाता है।

दिल्ली भाजपा द्वारा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन पर आधारित नाट्य मंचन का किया जाएगा आयोजन

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि एक राजनीतिक पार्टी के रूप में भाजपा का हर कार्यकर्ता डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचारो को अनुसरण करता है और भाजपा विचार आधारित पार्टी है। इसलिए उन विचारो को जन जन पहुंचाने के लिए पिछले एक महीने से दिल्ली भाजपा द्वारा तैयारी की जा रही है और कल भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा की उपस्थिति में कमानी ऑडिटोरियम में डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन पर आधारित नाटय मंचन का आयोजन किया गया है।

दिल्ली भाजपा मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर ने प्रेसवर्ता को संचालित करते हुए कहा कि हम राजनीति में केवल राजनीति के लिए नहीं विचारो के लिए भी है और उन्हीं विचारो को प्रस्तुत करने का यह नाट्य मंचन एक माध्यम है। प्रेसवर्ता में दिल्ली भाजपा मोर्चों के प्रभारी सुमित भसीन और प्रवक्ता नितिन त्यागी भी उपस्थित थे।

वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि 8 जुलाई को शाम 4 बजे होने वाले नाटय मंचन में डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन से जुड़े पहलु देखने को मिलेंगे - बाल्या अवस्था में उनका स्वभाव, कॉलेज जीवन से लेकर युवा कुलपति बनने तक का सफर, राजनीतिक प्रवेश से लेकर देश की एकता के लिए नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफ़ा देना और फिर जम्मू कश्मीर यात्रा और शेख अब्दुल्ला से मिलना है इन सभी विषयों को हमने दिखाने की कोशिश की है। इसमें भाग लेने वाले कलाकार राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से हैं। सोमवार शाम 6 बजे इसका फुल ड्रेस रिहर्सल मीडिया के लिए की गई

सचदेवा ने कहा कि डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने हमेशा सिर्फ ध्येय के लिए काम किया कभी पद के लिए काम नहीं किया इसलिए उन्होंने देश की एकता और अखंडता के लिए अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्र सर्वप्रथम के विचार से आगे बढ़ना उनका एक मात्र लक्ष्य था और आज उन्होंने जो बीज लगाया था वह भारतीय जनता पार्टी के रूप में एक वटवृक्ष बनकर विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका है।

अब तक की जांच अनुसार 83 हजार से अधिक पंजीकृत महिलाओं के केस फर्जी या संदेहास्पद हैं : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की आज कुछ पत्रकारों के माध्यम से सामने आया है की अरविंद केजरीवाल सरकार के शासन में दिल्ली सरकार की असहाय महिलाओं की स्कीम की आड़ में भारी घोटाला हुआ और दिल्ली वाले वर्तमान मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सरकार से चाहते हैं की इसकी उच्च स्तरीय जांच कराई जाये।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की दिल्ली सरकार 1 लाख रूपए वार्षिक से कम आये वाली महिलाओं या पूर्णतया असहाय महिलाओं को 2010 के एक आदेश अनुसार विशेष रूपए 2500 की मासिक पेंशन देती है।

गत वर्ष दिल्ली भाजपा के कुछ विधायकों एवं कुछ समाचार पत्रों ने असहाय महिला पेंशन के वितरण में हेरफेर का संदेह प्रकट करते हुए सवाल उठाए और जांच की मांग की। दिल्ली भाजपा ने इस संदर्भ में ₹आपश्र कार्यालय पर प्रदर्शन भी किये थे।

उचित स्वीकृति के बाद अक्टूबर 2024 में जांच शुरू हुई पर फरवरी तक तत्कालीन सरकार ने उसे आगे नही बढ़ने दिया पर अब हमें पत्रकारों से मालूम हुआ है की जांच पूरी हुई है और एक बहुत बड़ा घोटाला सामने आया है।

जानकारी अनुसार कुल 3 लाख 81 हजार 539 असहाय महिलाएं इस पेंशन के लिए पंजीकृत थीं पर जांच में दो तरह की गड़बड़ी के साथ पाया गया की लगभग 60 हजार से अधिक पंजीकृत महिलाओं के केस फर्जी हैं।

इसके अलावा 22795 मामलों में डुप्लीकेट या अन्य गड़बड़ी भी हैं।

मीडिया कर्मियों से मिली जानकारी अनुसार जांच में पाया गया की 60573 मामलों में जांच अधिकारी को पंजीकृत महिला के दिए पते पर ना वह मिलीं ना उनके वहां रहने का कोई प्रमाण मिला। अनेक मामलों में तो पते भी फर्जी मिले।

सचदेवा ने कहा है की साफ दिख रहा है की 60 हजार से अधिक फर्जी असहाय महिलाओं के नाम पर लगभग रूपए 200 करोड़ से अधिक का वार्षिक घोटाला हुआ।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की दिल्ली वाले चाहते हैं की केजरीवाल बतायें की यह लगभग 200 करोड़ रूपए हर माह किसकी जेब में जाते थे - मंत्रियों के, विधायकों की, कार्यकर्ताओं की, अधिकारियों की या फिर आम आदमी पार्टी के चुनाव चंदे में ?

गुरु जी का जन्मदिन फन वे लर्निंग एनजीओ में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। स्वादिष्ट आलू की सब्ज़ी और खीर परोसी गई।

तुलसी 2.0 का धमाकेदार लुक आया सामने, फिर जिंदा हुई 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी 2' से टीवी की सबसे प्यारी बहू की यादें!

मुख्य संवाददाता

स्टार प्लस एक बार फिर अपने सबसे चर्चित शो 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' के नए सीज़न के साथ तैयार है और फैंस की एक्साइटमेंट देखने लायक है। जैसे-जैसे शो की ग्रैंड रिलीज का वक्त नज़दीक आ रहा है, सोशल मीडिया पर तुलसी की एक लीक तस्वीर वायरल हो रही है, जिसे देखकर लोग पहली झलक को लेकर और भी ज़्यादा उत्साहित हो गए हैं। शो की लीड किरदार तुलसी विरानी को नए अंदाज़ में देखने के लिए सभी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं।

इस तस्वीर में स्मृति ईरानी, जो तुलसी विरानी का किरदार निभा रही हैं, मरून रंग की साड़ी में नजर आ रही हैं, जिसमें गोल्डन ज़री बॉर्डर है। उनके चेहरे पर वही पुरानी गरिमा और आत्मविश्वास झलक रहा है। उन्होंने एक सादा काले रंग का मंगलसूत्र, हल्के गहने और अपनी पहचान बन चुकी बड़ी लाल बिंदी लगाई है, जो तुलसी के संबल और शालीनता का प्रतीक रही है। उनके बाल सलीके से जूड़े में बंधे हुए हैं। इस पहली झलक ने दर्शकों को एक बार फिर उस सुनहरे टेलीविज़न दौर में लौटा दिया है और तुलसी विरानी के साथ उनकी भावनात्मक जुड़ाव को फिर से जिंदा कर दिया है।

'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' भारतीय टेलीविज़न के सबसे बड़ी विरासतों में से एक है। साल 2000 में लॉन्च हुआ यह शो सिर्फ़ प्राइम टाइम पर नहीं छाया, बल्कि करोड़ों भारतीय परिवारों के दिलों में हमेशा के लिए अपनी जगह बना गया। यह सिर्फ़ एक डेली सोप नहीं था, बल्कि एक भावना बन गया, जो पीढ़ियों के साथ जुड़ गया। यह शो हर घर में एक पारिवारिक रस्म की तरह देखा जाने लगा, और तुलसी और मिहिर विरानी भारतीय टेलीविज़न के सबसे यादगार किरदार बन गए।

जैसे-जैसे शो का नया सीज़न अपनी ग्रैंड रिलीज़ की ओर बढ़ रहा है, मेकर्स जल्द ही इस मच अवेटेड शो की रिलीज़ डेट का ऐलान करने वाले हैं। नई जानकारी और अपडेट्स के लिए हमारे साथ बने रहिए!

गोवर्धन मुड़िया मेला में श्रद्धालुओं की सेवा में जुटी सिविल डिफेंस मथुरा

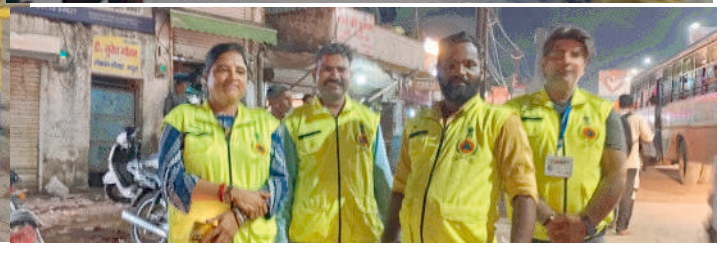

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: हर वर्ष की भांति इस बार भी जिला अधिकारी नियंत्रक नागरिक सुरक्षा मथुरा के आदेश अनुसार अपर जिला अधिकारी नमामि गंगे राजेश यादव के द्वारा सिविल डिफेंस मथुरा की ड्यूटी गोवर्धन चौराहा, मण्डी चौराहे, रेलवे स्टेशन, नया बस स्टैंड, गोवर्धन दानघाटी मन्दिर, भूतेश्वर चौराहा आदि स्थानों पर उप नियंत्रक मुनेश कुमार गुप्ता, चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल के नेतृत्व में नागरिक सुरक्षा मथुरा की वार्डन पोस्ट संख्या एक के पोस्ट वार्डन अशोक यादव की क्विक रिस्पांस टीम एवं सिविल डिफेंस के 120 वार्डन एवं स्वयंसेवकों को गोवर्धन चौराहा, मण्डी चौराहे, रेलवे स्टेशन, दानघाटी मन्दिर गोवर्धन पर श्रद्धालुओं की सेवा में निष्काम भाव से ड्यूटी करते नजर आए बही पोस्ट वार्डन अशोक यादव एवं उनकी टीम ने मथुरा रेलवे स्टेशन पर एक बिछड़े परिवार को आपस में मिलवाया गया बिछड़ा हुआ परिवार भोपाल जिले से मथुरा परिक्रमा लगाने के लिए आए थे उन्होंने रेलवे स्टेशन पर खोया पाया केंद्र पर सूचना करने के बाद सिविल डिफेंस की टीम ने उनके 5 वर्षीय बच्चे आशीष को रेलवे पुलिस की मदद से उनको मिलवाया गया बच्चे के मिलने से परिवार के सदस्य के लोगो द्वारा सिविल डिफेंस और रेलवे पुलिस का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। श्रद्धालुओं की सेवा में डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल सीनियर स्टाफ ऑफीसर दीपक चतुर्वेदी बैंकर, पोस्ट वार्डन अशोक यादव, जितेन्द्र धनगर, राम सैनी, शैलेश खण्डेलवाल, प्रवेश दीक्षित, साहिद, विक्रम, सुनैना गुप्ता, शैली अग्रवाल, नितिन, पवन शर्मा, आदि वार्डन एवं स्वयंसेवक ड्यूटी देते नजर आए।

तेज डिलीवरी सुनिश्चित करने के लिए पंचकूला, मोहाली और अन्य टियर II और III शहरों में 30+ नए डिलीवरी स्टेशन लॉन्च किए गए

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नईदिल्ली : अमेजन इंडिया अपने सबसे प्रतीक्षित शॉपिंग इवेंट – प्राइम डे 2025 के लिए पूरी तरह तैयार है, जो विशेष रूप से प्राइम मेंबर्स के लिए आयोजित किया जा रहा है। 12 जुलाई की मध्यरात्रि 12:00 बजे से लेकर 14 जुलाई की रात 11:59 बजे तक, 72 घंटों की नॉन-स्टॉप शॉपिंग के लिए तैयार हो जाइए, जहां मिलेगा सबसे बड़ा कलेक्शन, सबसे तेज डिलीवरी, बेमिसाल डील्स और ब्लॉकबस्टर एंटरटेनमेंट। चाहे आप अपने गैजेट्स अपग्रेड करना चाहते हों, वॉर्डरोब को रिफ्रेश करना हो या घर को नया लुक देना हो, प्राइम डे में स्मार्टफोन, इलेक्ट्रॉनिक्स, टीवी, अप्लायंसेज़, अमेजन डिवाइसेज़, फैशन, ब्यूटी, होम व किचन, फर्नीचर, किराना, रोजमर्रा की जरूरतें और बहुत कुछ शानदार छूट के साथ मिलेगा।

प्राइम, डिलिवरीज और रिटर्न्स, इंडिया और इमर्जिंग मार्केट्स के डायरेक्टर अक्षय साही ने कहा, ₹प्राइम डे हमारे ग्राहकों के लिए एक उत्सव है, और इस साल हम इसे अब तक से भी बड़े स्तर पर मना रहे हैं, 72 घंटों की शॉपिंग, बेहतरीन बचत और ब्लॉकबस्टर एंटरटेनमेंट के साथ। हजारों डील्स के साथ, प्राइम डे देशभर के प्राइम सदस्यों के लिए अमेज़न का सबसे अच्छा अनुभव लाएगा। ग्राहक अब 'रुफस' का भी इस्तेमाल कर सकते हैं – हमारा जनरेटिव एआई -संचालित शॉपिंग असिस्टेंट, जो खरीदारी की प्रक्रिया को आसान बनाता है। यह प्रोडक्ट्स की तुलना, व्यक्तिगत सुझाव और सबसे उपयुक्त विकल्प खोजने में मदद करता है। इस साल, रुफस और बेहतर हुआ है और अब डेस्कटॉप पर भी उपलब्ध है, ताकि प्राइम सदस्य आसानी से अपने लिए परफेक्ट डील्स ढूंढ सकें।₹

कंपनी ने हाल ही में भारत में अपनी सबसे तेज, सबसे सुरक्षित और भरोसेमंद ऑपरेशंस नेटवर्क को विकसित करने और संचालित करने की प्रतिबद्धता के तहत 2000 करोड़ रुपयों का निवेश भी किया है।

अमेज़न इंडिया और ऑस्ट्रेलिया के उपाध्यक्ष – ऑपरेशंस अभिनव सिंह का कहना है, ₹हमारा पैन-इंडिया लॉजिस्टिक्स नेटवर्क ग्राहकों को तेज और सुविधाजनक सेवाएं प्रदान करने की नींव है, और हम पूरे देश में तेज, भरोसेमंद सेवा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आज हमने देश के टियर-2 और टियर-3 शहरों, जैसे नागपुर, पंचकूला, हुबली, मोहाली, हावड़ा और इंदौर सहित 30 से अधिक नए डिलीवरी स्टेशनों की शुरुआत की घोषणा की है। यह अमेजन और उसके पार्टनर्स द्वारा संचालित 2,000 से अधिक मौजूदा डिलीवरी स्टेशनों और देशभर में फैले 28,000 से ज्यादा 'आई हैव स्पेस' स्टोर्स के अतिरिक्त है। अपने डिलीवरी नेटवर्क का विस्तार कर हम न सिर्फ मौजूदा ग्राहकों की मांग पूरी कर रहे हैं, बल्कि भविष्य की वृद्धि के लिए भी आधार तैयार कर रहे हैं। प्राइम डे 2025 के करीब आते हुए, ये नए स्टेशन हमारे व्यापक नेटवर्क के साथ मिलकर यह सुनिश्चित करेंगे कि देशभर के ग्राहकों को निर्बाध और समय पर डिलीवरी का अनुभव मिले।"

योगी सरकार की मंशा पर खरी सीपी अखिल की ईमानदारी पूर्ण कर्मठता कानपुर में सकुशल मोहर्रम

सुनील बाजपेई

कानपुर। तगड़ी तैयारियों के साथ कमिश्नरेट पुलिस की सतर्कता और सक्रियता ने बीते सभी त्योहारों की तरह चुनौतीपूर्ण मोहर्रम के त्यौहार को भी सकुशल और शांतिपूर्ण तरीके संपन्न कराने में सफलता प्राप्त कर ली है।

यह भी अवगत कराते चलें कि सांप्रदायिक दृष्टिकोण से अति संवेदनशील से कानपुर में इस बार के भी मोहर्रम को सफल और शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न कराने वाले कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ और पीड़ितों के हित में अपने कर्तव्य का पालन सदैव निष्ठा और ईमानदारी के साथ करने वाले निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली के तेजतर्रार ,व्यवहार कुशल तथा कठोर परिश्रमी वरिष्ठ आईपीएस एडीजी अखिल कुमार की गिनती देश प्रदेश के उन कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार आईपीएस अधिकारियों में की जाती है ,जिन्होंने अपनी कर्तव्य के प्रति निष्ठा के साथ समझौता आज तक नहीं किया।

निर्दोष फंसे नहीं और अपराधी बचे नहीं जैसी लोकहित की विचारधारा वाले एडीजी अखिल कुमार कानपुर के पहले ऐसे पुलिस कमिश्नर हैं ,जिन्होंने हर तरह के अपराधियों के खिलाफ जनहित से जुड़े हर मुद्दे पर सराहनीय कार्रवाई के रिकॉर्ड भी तोड़े हैं। वह चाहे घटनाओं के सटीक खुलासे के साथ ही शातिरों को जेल का रास्ता दिखाने का मामला हो या फिर उनकी गिरफ्तारी में विशेष रूप से सहायक त्रिनेत्र अभियान के तहत सैकड़ों कैमरे लगवाने का मामला, ट्रैफिक व्यवस्था को पहले से बहुत बेहतर बनाने में मिली सफलता हो अथवा सभी त्योहारों और पर्वों को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न करने का मामला, और इसमें भी पत्रकारिता के क्षेत्र में आने वाली भावी पीढ़ियां भी जिसे सदैव याद रखेंगी, वह है विश्व पत्रकारिता के इतिहास में पहली बार किया गया पत्रकारिता की आढ़ में सक्रिय रहा अवनीश दीक्षित जैसे शातिर अपराधी माफिया गिरोह का भंडाफोड़। जिसका पूर्ण श्रेय कठोर परिश्रम वाले जुझारू पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार की कर्तव्य निष्ठा, उनकी ईमानदारी और उनकी निडरता को ही जाता है।

कुल मिलाकर चुनौती पूर्ण कानपुर में पुलिस कमिश्नर के रूप में पोस्टिंग के बाद उनकी हर कार्य योजना की सफलता जनता के हित में और अपराधियों के खिलाफ योगी सरकार का इकबाल बुलंद करने वाली ही साबित हुई है। आम जनता की नजर में बेहद कर्मठ और ईमानदार कानपुर के पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार द्वारा बीते सभी त्योहारों की तरह इस बार के भी चुनौतीपूर्ण मोहर्रम को सकुशल तथा शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराना उनकी विवेकशीलता, उनकी दूरदर्शिता, उनकी व्यवहार कुशलता और उनकी परिश्रम पूर्ण नेतृत्व कुशलता का ही प्रशंसनीय सार्थक परिणाम है।

मुहर्रम के दौरान झारखंड के कई जिलों में हंगामा, प्रशासन ने किया नियंत्रित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, झारखंड में रविवार को मुहर्रम के जुलुस के दौरान कुछ जगहों पर हंगामा हो गया. इनमें हजारीबाग, पलामू तथा साहिबगंज शामिल हैं. स्थानीय शासन ने समय रहते कमान थामी और स्थिति पर नियन्त्रण पा लिया . हंगामा के बाद इलाके में तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई है.

पलामू जिले के पाटन में मुहर्रम जुलूस के दौरान दो पक्षों में हिंसक झड़प हो गयी. पुलिस और प्रशासन ने जब इसे रोकने की कोशिश की, तो एक पक्ष की ओर से पत्थर चलाये गये. इस बीच दो भाइयों पर तलवार से हमला भी हुआ . अब दोनों गंभीर रूप से जख्मी हालत में अस्पताल में भर्ती हैं. घायलों की पहचान गौतम कुमार सिंह और प्रवीण सिंह के रूप में की गयी है.

आगे मिली जानकारी के अनुसार हजारीबाग के केरेडारी थाना क्षेत्र के बेलतु गांव में एक पक्ष के लोगों ने हंगामा किया. पुराना पंचायत भवन के सामने धार्मिक जुलूस को रोक दिया. जुलूस शाम पांच बजे रानी तालाब कर्बला के लिए निकला था, जहां मेले का आयोजन होता है. लेकिन जुलूस बेलतु गांव में रुका हुआ बताया जाता है .

एक दिन पहले बेलतु बाजारटांड़ में झंडा लगाने को लेकर विवाद हुआ था. अब एक पक्ष का कहना है कि जब तक झंडा नहीं हटेगा, तब तक जुलूस को नहीं जाने दिया जायेगा. घटना की सूचना पर सदर एसडीओ बैद्यनाथ कामती, बड़कागांव एसडीपीओ पवन कुमार, केरेडारी सीओ और बीडीओ वहां पहुंचे. इस दौरान लोगों को समझाने का प्रयास किया गया.

साहिबगंज जिले में साहिबगंज के तालझारी के महाराजपुर मोतीझरना में मुहर्रम पर अखाड़ा जुलूस निकालने के दौरान कमेटी सदस्यों और थाना प्रभारी नितेश पांडे के बीच बहस हो गयी. ग्रामीणों का आरोप है कि महिलाओं और बुजुर्गों के साथ थाना प्रभारी नीतीश पांडे ने दुर्व्यवहार किया. इसके बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने एनएच 80 को जाम कर दिया. वह थाना प्रभारी को हटाने व न्याय दिलाने की मांग करने लगे. सूचना पाकर डीएसपी रूपक कुमार पहुंचे. उन्होंने लोगों को समझा-बुझाकर दो घंटे की मशक्कत के बाद सड़क जाम हटवाया।

सिंहभूम के जंगलों में पुनः 16 आईईडी बम बरामद

सरायकेला , चाईबासा पुलिस, सीआरपीएफ एवं जगुआर ने किया उद्धेदन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

झरझरा (प० सिंहभूम, चक्रधरपुर), झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले में सोमवार को भाकपा माओवादियों द्वारा अंजाम देने से पहले एक बड़ी दुर्घटना को नाकाम कर दी गयी . सर्च ऑपरेशन के दौरान सुरक्षा बलों ने टोकलो थाना क्षेत्र के कोटसोना एवं लांजी के जंगली क्षेत्रों में नक्सलियों द्वारा पहले से लगाए गए 16 आई ईडी बम बरामद किए. प्रत्येक का वजन लगभग 01-01 किलोग्राम है. बरामद आईईडी बमों को सुरक्षा के दृष्टिकोण से उसी स्थान पर बम निरोधक दस्ता की सहायता से नष्ट कर दिया गया. सर्च ऑपरेशन में चाईबासा पुलिस, सरायकेला-खरसावां पुलिस, झारखंड जगुआर और सीआरपीएफ की टीम शामिल थी.पश्चिमी सिंहभूम के पुलिस अधीक्षक को रविवार को गुप्त सूचना मिली थी कि प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी के उग्रवादियों द्वारा पश्चिमी सिंहभूम जिले के टोकलो थाना एवं सरायकेला-खरसावां जिले के दलभंगा ओपी के सीमावर्ती जंगली क्षेत्रों में गोला-बारूद छिपाकर रखा गया है, ताकि सुरक्षा बलों को नुकसान पहुंचाया जा सके. इस सूचना के आलोक में टीम गठित कर सोमवार को सर्च ऑपरेशन चलाया गया. इस दौरान सुरक्षा बलों को सफलता मिली.

गौमाता में हैं तैंतीस कोटि देवी-देवताओं का वास : मां ध्यानमूर्ति

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गौशाला नगर स्थित मां ध्यानमूर्ति सत्संग सेवा संस्थान में गुरु पूर्णिमा के पावन उपलक्ष्य में चल रही सप्तदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के अंतर्गत गौ संवर्धन केंद्र व चिकित्सालय का प्रथम स्थापना समारोह आयोजित किया गया ।जिसके अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों से आए हजारों श्रद्धालुओं ने गौमाता का पूजन-अर्चन कर गौ संरक्षण और संवर्धन का पुनीत संकल्प लिया। इस अवसर पर गौ की महिमा बताते हुए महामंडलेश्वर मां ध्यानमूर्ति गिरि महाराज ने कहा कि गौमाता में तैंतीस कोटि देवी-देवताओं का वास माना जाता है। गौमाता की पूजा करने से हमें तैंतीस कोटि देवी-देवताओं की एक साथ पूजा का पुण्यफल मिलता है।

उन्होंने कहा कि गौमाता का हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता में आदिकाल से विशेष महत्व रहा है। गौमाता की आराधना हमारी भक्ति परंपरा का अभिन्न अंग है। संस्थान के सचिव डॉ. हरिओम शास्त्री ने बताया कि हमारे गौ संवर्धन केंद्र और चिकित्सालय में बीमार व सड़क दुर्घटना में घायल गौवंश का इलाज किया जाता है। यमुना एक्सप्रेस वे, नेशनल हाइवे सहित आदि प्रमुख सड़क मार्गों पर भारी वाहनों की चपेट में आकर बुरी तरह से घायल हो चुकी गायों की यहां हर प्रकार की निस्वार्थ सेवा की जाती है। दीनू पंडित ने कहा कि नगर के विभिन्न इलाकों में आएदिन बड़े बड़े नालों में गिरकर चुटैल व बीमार गायों का इलाज पिछले एक वर्ष से हो रहा है। अब तक 500 से अधिक गौवंश की सफल चिकित्सा हमारे केंद्र द्वारा की जा चुकी है।

इससे पूर्व वैदिक मंत्रोच्चारण के मध्य विधि-विधान से गौमाता का पूजन-अर्चन भी किया गया ।साथ ही समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं ने गौवंश को फल, सब्जी, हरा चारा, गुड़ इत्यादि खाद्य पदार्थ भी खिलाए।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, सुज्ञान मोदी, राजकुमार अग्रवाल, कृष्ण कुमार बंसल, राजेंद्र मोदी, चेतराम, महेन्द्र अग्रवाल, सागर शर्मा, देवनारायण शुक्ला, राजकुमार गौतम, डॉ. राधाकांत शर्मा, राधिका रमन शरण मोदी आदि उपस्थित रहे।

भारतीय जाटव समाज ने अनुसूचित जाति के जाति प्रमाण पत्र में 'जाटव' उपनाम शामिल करने की मांग

वो शब्द उनकी सामाजिक पहचान को कमतर दर्शाता है और सम्मानजनक नहीं माना जाता - उपेंद्र सिंह

जाति प्रमाण पत्रों में रजाटवर उपनाम को ही प्राथमिकता दी जाए, यह महज़ नाम का परिवर्तन नहीं, बल्कि समाज के आत्म-सम्मान की रक्षा का मुद्दा है। -- उपेंद्र सिंह

लखनऊ,संजय साग़र सिंह। — अनुसूचित जाति वर्ग से सम्बन्धित उपजातियों को उनके आत्म-सम्मान और सामाजिक गरिमा की दृष्टि से जातिगत पहचान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मांग सामने आई है। भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेन्द्र सिंह ने उत्तर प्रदेश सरकार से आग्रह किया है कि जाति प्रमाण पत्रों में रजाटवर उपनाम को सम्मिलित किया जाए।

इस संबंध में उपेन्द्र सिंह ने समाज कल्याण मंत्री, उत्तर प्रदेश शासन, मंत्री महोदय असीम अरुण से व्यक्तिगत भेंट कर ज्ञापन सौंपा और समाज की भावना से उन्हें अवगत कराया। ज्ञापन में कहा गया है कि चमार समुदाय की विभिन्न उपजातियाँ — जैसे दोहरे, अहिरवार, शंखवार, कुरील, रविदास आदि विशेष रूप से पूर्वांचल क्षेत्र में निवास करती हैं और पारंपरिक रूप से उन्हें रचमारर नाम से पुकारा जाता रहा है।

हालाँकि, वर्तमान समय में समाज की नई पीढ़ी इस शब्द को सामाजिक अपमान और मानसिक ठेस का कारण मानती है। उनका मानना है कि यह शब्द उनकी सामाजिक पहचान को कमतर दर्शाता है और सम्मानजनक नहीं माना जाता।

उपेन्द्र सिंह ने मंत्री महोदय से आग्रह किया है कि जाति प्रमाण पत्रों में रजाटवर उपनाम को ही प्राथमिकता दी जाए, जो कि एक मान्य उपजाति है और समुदाय द्वारा अधिक स्वीकृत भी। उन्होंने कहा, रयह महज़ नाम का परिवर्तन नहीं, बल्कि समाज के आत्म-सम्मान की रक्षा का मुद्दा है।

मंत्री महोदय असीम अरुण ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया है कि इस संवेदनशील विषय पर गंभीरता से विचार किया जाएगा और समाज हित में उचित निर्णय लिया जाएगा।

ज्ञापन के साथ छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा इस विषय में लिए गए पूर्व निर्णयों के आदेश पत्र भी संलग्न किए गए हैं, जिनमें इसी प्रकार की पहल की गई थी।

यह पहल अनुसूचित जाति वर्ग में सम्मानजनक पहचान और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

अपने भक्तों के सभी मनोरथ सिद्ध करते हैं गिरिराज गोवर्धन : आचार्य मृदुल कृष्ण गोस्वामी महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। छटीकरा रोड़ स्थित मृदुल वृन्दावन धाम में द भागवत मिशन फाउंडेशन एवं भागवत परिवार समिति (रजि.) दिलशाद गार्डन,दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे अष्टदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा एवं श्रीगुरू पूर्णिमा महोत्सव के पांचवें दिन विश्वविख्यात भागवत रत्न आचार्य गोस्वामी मृदुल कृष्ण महाराज ने देश-विदेश से आए विभिन्न भक्तों-श्रृद्धालुओं को श्रीगिरिराज लीला प्रसंग की कथा श्रवण कराते हुए कहा कि गिरिराज गोवर्धन महाराज साक्षात भगवान श्रीकृष्ण के ही प्रतिरूप हैं ।उनमें और श्रीकृष्ण में कोई भेद नहीं है ।वस्तुतः भगवान श्रीकृष्ण ने प्रकृति का संरक्षण करने के लिए ही गिरिराज पूजा की लीला की थी ।जिससे कि लोग प्रकृति के महत्व को जानें और उसकी उपयोगिता का सही से पालन करें।

आचार्य गोस्वामी मृदुल कृष्ण महाराज ने कहा कि ब्रज की पावन भूमि पर त्रिदेव पर्वत रूप में विद्यमान हैं। जो कि बरसाना में ब्रह्मगिरि (ब्रह्मदेव), नंदगांव में नंदीश्वर पर्वत (महादेव) एवं गोवर्धन में गिरिराज पर्वत (भगवान विष्णु) के स्वरूप हैं ।इनकी पूजा व परिक्रमा करने से व्यक्ति के सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं ।इसीलिए गिरिराज गोवर्धन महाराज ब्रजवासियों के इष्टदेव हैं।

इस अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण की अत्यंत नयनाभिराम और चित्ताकर्षक झांकी के दर्शन कराए गए ।साथ ही गिरिराज गोवर्धन को 56 भोग लगा कर उसका प्रसाद वितरित किया गया।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, प्रमुख समाजसेवी दासबिहारी अग्रवाल, महोत्सव के मुख्य यजमान श्रीमती हिना-विकास अग्रवाल, श्रीमती श्याम लता-कुसुम पाल शर्मा, श्रीमती अरुणा शर्मा, आचार्य किशोर कुमार शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा, आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 6-7 जुलाई 2025-पुतिन व शी ज़िनपिंग की गैर मौजूदगी- भारतीय पीएम का आगाज़ ग्लोबल साउथ दोहरे मापदंडों का हो रहा है शिकार

- ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 6-7 जुलाई 2025-पुतिन व शी ज़िनपिंग की गैर मौजूदगी- भारतीय पीएम का आगाज़ ग्लोबल साउथ दोहरे मापदंडों का हो रहा है शिकार
- वैश्विक संस्थाओं क़ा एआई युग में 80 साल में एक बार भी संशोधित नहीं होना,20वीं सदी के टाईपराइटर क़ाम बनाम 21वीं सदी के सॉफ्टवेयर
- ग्लोबल साउथ को वैश्विक संस्थाओं की निर्णय टेबल पर प्रतिनिधित्व नहीं देना,जैसे मोबाइल में सिम तो है पर नेटवर्क नहीं, सटीक कटाक्ष - **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ परंतु विशेष रूप से यूरोप व विकसित देशों को ब्रिक्स देशों के अति महत्वपूर्ण व संभाव्य रुतबे का ज़रूर एहसास होगा, क्योंकि यह पहले 7 देशों का परिवार था,जो अभी बढ़कर 11 हो चुके हैं और भविष्य में 30 तक जाने की संभावना है,इन मजबूत देशों को किसी वैश्विक निर्णायक मोड टेबल पर स्थान नहीं दिया गया है,जबकि दुनियाँ को 42 पर्सेंट आबादी से अधिक, जीडीपी में 23 परसेंट, व्यय में 17 परसेंट, वैश्विक विकास, व्यापार व निवेश में बहुत बड़ा योगदान है, वैश्विक गरीबी से लड़ने में महत्वपूर्ण सहयोग व तेल गैस प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर 11 देशों का व्यापार अमेरिकी डॉलर से होता है जो एक मुद्दा बना कि ब्रिक्स देशों को अल्टरनेटिव करेंसी के रूप में लाया जाएगा,जिसपर फरवरी 2025 में ट्रंप ने कहा था कि अगर डॉलर से छेड़छाड़ की गई तो 100 से 500 परसेंट तक टैरिफ लगा दिया जाएगा। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र, यह मानता हूं कि इस बार ब्राजील में हो रहे 17 वाँ ब्रिक्स शिखर सम्मेलन कुछ फ़ीका सा लग रहा है, क्योंकि इसमें रूस के राष्ट्रपति पुतिन चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग व ईरानी राष्ट्रपति हाजिर नहीं हुए हैं, जो शायद ब्रिक्स के जीवनकाल में पहली बार हो रहा है, कई और नेताओं के न आने के कारण ब्राज़ील और लेटिन अमेरिकी मीडिया रिपोर्टों में रियो डी जेनेरियो में हो रही इस बैठक को कम भागीदारी वाली' और यहां तक कि 'खाली' बताया जा रहा है,ब्राज़ीलमीडिया रिपोर्टों के मुताबिक़, ब्रिक्स के एक और अहम नए सदस्य मिस्र के राष्ट्रपति भी बैठक में मौजूद नहीं होंगे ब्रिक्स के मुख्य सदस्य देशों में से भारत के पीएम और दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति के साथ नए सदस्य इंडोनेशिया के राष्ट्रपति इस बैठक में व्यक्तिगत रूप से शामिल हुए हैं,हालांकि, ब्राज़ील और अन्य क्षेत्रीय विश्लेषकों का मानना है कि इतने नेताओं के न आने से वामपंथी मेज़बान लूला डि सिल्वा की खुद को अंतरराष्ट्रीय नेता के तौर पर स्थापित करने की कोशिश प्रभावित हो सकती है ।दरअसल, ब्रिक्स देशों के बीच खुद भी मतभेद हैं, जहां चीन और रूस अमेरिका विरोधी सख्त रुख अपनाते हैं, वहीं भारत और ब्राजील संतुलित रुख के पक्षधर हैं, इस साल सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे ब्राजील के राष्ट्रपति की कोशिश है कि एआई, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर केंद्रित रहकर सम्मेलन को राजनीतिक विवादों से दूर रखा जाए, ट्रंप की अमेरिका में सत्ता में वापसी के बाद ब्राजील नहीं चाहता कि वह किसी भी तरह के अमेरिकी प्रतिबंधों का निशाना बने ।ब्रिक्स नेताओं,ने यह चेतावनी भी दी कि अमेरिकी राष्ट्रपति के रअंधाधुंधर आयात शुल्क से वैश्विक अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचने का खतरा है ।अंतिम शिखर सम्मेलन के वक्तव्य के अनुसार, ब्रिक्स नेताओं ने रएकतरफा टैरिफ और गैर-टैरिफ उपायों के बढ़ने पर गंभीर चिंता व्यक्त की,रतथा चेतावनी दी कि ये अवैध और मनमाने हैं ।चूँकि ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में पुतिन व शी जिनपिंग की गैर मौजूदगी व भारतीय पीएम का आगाज़, ग्लोबल साउथ दोहरे मापदंड का हो रहा है शिकार, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे ग्लोबल साउथ को वैश्विक संस्थाओं की निर्णय टेबल पर प्रतिनिधित्व नहीं देना जैसे मोबाइल में सिम तो है, पर नेटवर्क नहीं सटीक कटाक्ष है।

साथियों बातअगर हम एक ऐसे ब्रिक्स की परिकल्पना करने की करें जो कुछ परिणाम देगा,तो उनमें से, जलवायु परिवर्तन वित्तपोषण,कृत्रिम बुद्धिमत्ता के वित्तपोषण और विनियमन पर एक समर्पित घोषणा, और सामाजिक रूप से निर्धारित बीमारियों पर साझेदारी,वे बीमारियाँ जिन्हें हम गरीबी की स्थिति से जोड़ते हैं। पहले सत्र के अलावा, रियो ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के सभी सत्र भागीदार देशों और आमंत्रित देशों के लिए खुले रहेंगे। यह मानवता की बड़ी चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए मंच में पारदर्शिता और समावेशिता का एक प्रयास है। एक स्पष्ट संकेत यह है कि 30 से अधिक देशों ने ब्रिक्स में शामिल होने में रुचि व्यक्त की है। यह बहुत कुछ कहता है ।अमेरिकी राष्ट्रपति ने धमकी दी है कि अगर ब्रिक्स डी-डॉलराइजेशन की ओर बढ़ता है तो वे उसके खिलाफ 100-500 पेर्सेंट टैरिफ लगा देंगे। ऐसा कोई प्रस्ताव या चर्चा सम्मेलन में नहीं होने की संभावना है।

साथियों बात अगर हम ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 2025 मेंरविवार 6 जुलाई 2025 को देर शाम भारतीय पीएम के संबोधन की करें तो,उन्होंने कहा, 'ग्लोबल साउथ अक्सर दोहरे मानदंडों का शिकार रहा है। चाहे विकास की बात हो, संसाधनों के वितरण की बात हो या सुरक्षा से जुड़े मुद्दों की, ग्लोबल साउथ के हितों को प्राथमिकता नहीं दी गई है। जलवायु वित्त, सतत विकास और प्रौद्योगिकी पहुंच जैसे मुद्दों पर ग्लोबल साउथ को अक्सर सिर्फ औपचारिक इशारे ही मिले हैं' ।आगे कहा '20वीं सदी में बनी वैश्विक संस्थाएं 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने में असमर्थ हैं। चाहे दुनियाँ के अलग-अलग हिस्सों में चल रहे संघर्ष हों, महामारी हो, आर्थिक संकट हो या साइबरस्पेस में नई उभरती चुनौतियां हों, इन संस्थाओं के पास कोई समाधान नहीं है' ।आगे कहा 'एआई के युग में, जहां हर हफ्ते तकनीक अपडेट होती है, यह स्वीकार्य नहीं है कि कोई वैश्विक संस्थान 80 साल में एक बार भी अपडेट न हो। 20वीं सदी के टाइपराइटर 21वीं सदी के सॉफ्टवेयर को नहीं चला सकते' । 20वीं सदी में गठित वैश्विक संस्थाओं में मानवता के दो तिहाई हिस्से को पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिला है। आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था में अहम योगदान देने वाले देशों को निर्णय लेने वाली मेज पर जगह नहीं दी गई है। यह सिर्फ प्रतिनिधित्व का सवाल नहीं है, बल्कि विश्वसनीयता और प्रभावशीलता का भी सवाल है। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए एआई का भी जिक्र किया ।अंत में एक बड़ा संदेश देते हुए कहा कि आज दुनिया को एक नई, बहुध्रुवीय और समावेशी विश्व व्यवस्था की जरूरत है। इसकी शुरुआत वैश्विक संस्थाओं में व्यापक सुधारों से करनी होगी। सुधार केवल प्रतीकात्मक नहीं होने चाहिए, बल्कि उनका वास्तविक प्रभाव भी दिखना चाहिए। ग्लोबल साउथ को जलवायु वित्त, सतत विकास और प्रौद्योगिकी पहुंच पर सिर्फ दिखावटी चीजें मिली हैं ।विकास, संसाधनों के वितरण या सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर ग्लोबल साउथ के साथ दोहरा मापदंड अपनाया गया है ।रब्रिक्स का विस्तार और नए दोस्तों का जुड़ना इस बात का प्रमाण है कि ब्रिक्स एक ऐसा संगठन है जो समय के अनुसार खुद को बदल सकता है। अब, हमें यूएन सुरक्षा परिषद, डब्लूएचओ और बहुपक्षीय विकास बैंकों जैसे संस्थानों में सुधार के लिए भी ऐसी ही इच्छाशक्ति दिखानी होगी। ब्रिक्स ने खुद को बदला है और नए देशों को शामिल किया है। अब हमें यूएन सिक्योरिटी कौंसिल, डब्लूटीओ और मल्टीलेटरल डेवलपमेंट बैंक्स जैसे संगठनों में भी बदलाव करने होंगे। हमें इन संगठनों को और बेहतर बनाने के लिए काम करना होगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे किब्रिक्स शिखर सम्मेलन 6-7 जुलाई 2025-पुतिन व शी ज़िनपिंग की गैर मौजूदगी- भारतीय पीएम का आगाज़ ग्लोबल साउथ दोहरे मापदंडों का हो रहा है शिकार वैश्विक संस्थाओं क़ा एआई युग में 80 साल में एक बार भी संशोधित नहीं होना, 20वीं सदी के टाईपराइटर क़ाम बनाम 21वीं सदी के सॉफ्टवेयर ग्लोबल साउथ को वैश्विक संस्थाओं की निर्णय टेबल पर प्रतिनिधित्व नहीं देना, जैसे मोबाइल में सिम तो है पर नेटवर्क नहीं, सटीक कटाक्ष हैं।

क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान के पास हैं ये पांच बेहतरीन कारें

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी आज अपना जन्मदिन मना रहे हैं। धोनी को कारों और बाइक्स का काफी ज्यादा शौक है और दुनिया की कई बेहतरीन कारें उनके गैराज में शामिल हैं। कौन सी पांच सबसे बेहतरीन कारें महेंद्र सिंह धोनी के गैराज में खड़ी हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान या कैप्टन कूल के नाम से पहचाने जाने वाले महेंद्र सिंह धोनी आज अपना जन्मदिन (MS Dhoni Birthday) मना रहे हैं। उनको क्रिकेट के साथ ही कारों का भी काफी ज्यादा शौक है। धोनी के गैराज में वैसे तो कई कारें खड़ी हुई हैं, लेकिन कौन सी पांच ऐसी बेहतरीन कारें हैं जिनमें धोनी अक्सर सफर करते हुए नजर आते हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Jeep Grand Cherokee TrackHawk

महेंद्र सिंह धोनी को अमेरिकी वाहन निर्माता जीप की ग्रैंड चिरोकी की ट्रैकहॉक काफी पसंद है। इस एसयूवी को अपने ताकतवर इंजन और परफॉर्मेंस के लिए जाना जाता है। इसके साथ ही इसमें ज्यादा जगह के साथ अग्रेसिव स्टाइल भी मिलता है। एसयूवी में 6.2 लीटर की क्षमता का वी8 पेट्रोल इंजन मिलता है।

Mercedes Benz G 63 AMG

मर्सिडीज बेंज की ओर से ऑफर की जाने वाली Mercedes Benz G 63 AMG भी धोनी के गैराज में शामिल एक बेहतरीन एसयूवी है। देश के कई बॉलीवुड एक्टर और व्यापारियों के पास भी इस एसयूवी को देखा जा सकता है। इसमें चार लीटर का ट्विन टर्बो वी8 पेट्रोल इंजन मिलता है।

Nissan Jonga

महेंद्र सिंह धोनी की कार कलेक्शन में Nissan Jonga भी शामिल है। विंटेज और दमदार गाड़ी के तौर पर इसकी दुनियाभर में अलग पहचान है। इसमें भी चार लीटर की क्षमता का वी8 इंजन मिलता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक धोनी ने इस गाड़ी को अपनी कलेक्शन में 2019 में शामिल किया था।

Hummer H2

अमेरिकी सेना की पसंदीदा गाड़ी हम्वी से बनी हमर भी धोनी के गैराज में शामिल एक बेहतरीन एसयूवी है। धोनी के पास Hummer H2 है जिसमें 6.2 लीटर की क्षमता का वी8 इंजन मिलता है। धोनी को अक्सर इस एसयूवी में सफर करते हुए देखा जाता है।

Citroen Basalt

महेंद्र सिंह धोनी हाल में ही सिट्रॉएन की बेसाल्ट कूप एसयूवी में सफर करते हुए नजर आए हैं। उम्मीद है कि यह धोनी की कार कलेक्शन में शामिल सबसे नई गाड़ी है। हालांकि धोनी सिट्रॉएन के ब्रॉन्ड अंबेसडर भी हैं और उनको हाल में ही बेसाल्ट के ब्लैक एडिशन में सफर करते हुए देखा गया था।

2025 रिनॉल्ट ट्राइबर की लॉन्च डेट फाइनल, अर्टिगा को टक्कर देगी नई फैमिली एमपीवी

परिवहन विशेष न्यूज

रेनो की ओर से भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। निर्माता की ओर से बजट एमपीवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Renault Triber 2025 को लॉन्च करने की तैयारी हो रही है। इसे किस तारीख को किस तरह के बदलावों के साथ लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। हैचबैक से लेकर एसयूवी तक ऑफर करने वाली प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Renault की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से किस गाड़ी को कब तक लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होगी 2025 Renault Triber

रेनो की ओर से जल्द ही बजट एमपीवी सेगमेंट में 2025 Renault Triber को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से इस गाड़ी के लॉन्च की तारीख भी तय कर दी गई है।

कब होगी लॉन्च

निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक 2025 Renault Triber को 23 जुलाई 2025 को लॉन्च किया जाएगा। इस एमपीवी में कई कॉस्मैटिक बदलावों को किया जाएगा। लेकिन इंजन में किसी भी तरह का बदलाव होने की उम्मीद कम है।

लॉन्च से पहले हो रही टेस्टिंग

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल में एमपीवी के फेसलिफ्ट को सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान फिर से देखा गया है। हालांकि इस यूनिट को भी पूरी तरह से ढंका गया था, लेकिन फिर भी इसके फ्रंट की कुछ जानकारी सामने आई है। इसमें नया बंपर, हेडलाइट और ग्रिल को दिया जाएगा। जिससे यह मौजूदा वर्जन के मुकाबले अलग नजर आएगी।

इंजन में नहीं होगा बदलाव

रिपोर्ट्स के मुताबिक रेनो की ओर से ट्राइबर एमपीवी के इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जाएगा। इसमें मौजूदा इंजन को ही ऑफर किया जाएगा। फिलहाल इस एमपीवी में एक लीटर की क्षमता का इंजन दिया जाता है जिसके साथ मैनुअल और एएमटी ट्रांसमिशन को दिया जाता है। इस एमपीवी को पेट्रोल के साथ ही सीएनजी में भी ऑफर किया जाएगा।

किनसे है मुकाबला

रेनो की ओर से ट्राइबर को बजट एमपीवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Ertiga के साथ होता है। इसके अलावा भी कीमत के मामले में इसे कई सब फोर मीटर एसयूवी और हैचबैक कारों से भी चुनौती मिलती है।

भारी छूट के साथ घर लाएं मारुति सुजुकी की कारें!

भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Maruti की ओर Arena डीलरशिप पर कई कारों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की इन कारों को July 2025 में खरीदने पर कितना क्या ऑफर मिल रहे हैं। कैश डिस्काउंट एक्स सचेंज बोनस और कॉर्पोरेट बोनस के तौर पर कितना डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में Maruti Arena डीलरशिप के जरिए कई बेहतरीन कारों की बिक्री की जाती है। अगर आप भी इस महीने कंपनी की किसी गाड़ी को Arena डीलरशिप से खरीदने का मन बना रहे हैं, तो July 2025 में किस तरह के Discount Offer दिए जा रहे हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Swift

मारुति की ओर से हैचबैक सेगमेंट में स्विफ्ट की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी पर इस महीने के दौरान सबसे ज्यादा ऑफर दिए जा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक इसके पेट्रोल एएमटी वेरिएंट पर 1.10 लाख रुपये तक बचाए जा सकते हैं। इसके सीएनजी और पेट्रोल वेरिएंट्स पर भी इस महीने 1.05 लाख रुपये के ऑफर मिल रहे हैं।

Maruti Alto K10

मारुति की ओर से ऑल्टो के10 पर July 2025 में अधिकतम 67500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। कंपनी ऑल्टो के10 के AMT वेरिएंट पर अधिकतम डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके अलावा मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ इसे खरीदने पर इस महीने में 62500 रुपये तक की बचत की जा सकती है।

Maruti S-Presso

मारुति की एस प्रेसो कार पर भी July 2025 में अधिकतम 62500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। इस महीने में इस गाड़ी के भी AMT वेरिएंट को खरीदने पर यह बचत की जा सकती है। इसके अलावा इसके मैनुअल पेट्रोल और सीएनजी वेरिएंट्स पर अधिकतम 57500 रुपये के डिस्काउंट का फायदा लिया जा सकता है।

Maruti Celerio

सेलेरियो पर मारुति की ओर से July महीने में अधिकतम 67500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। सेलेरियो पर इस महीने में यह ऑफर AMT वेरिएंट पर दिया जा रहा है। इसके अलावा पेट्रोल मैनुअल और सीएनजी मैनुअल पर इस महीने 62500 रुपये के डिस्काउंट का फायदा दिया जा रहा है।

Maruti Wagon R

कंपनी की ओर से वैगन आर पर भी अधिकतम 1.05 लाख रुपये का डिस्काउंट दिया जा रहा है। वैगन आर पर July महीने में यह बचत LXI पेट्रोल मैनुअल और सीएजी वेरिएंट्स पर की जा सकती है।

Maruti Brezza

मारुति की ओर से कॉम्पैक्ट एसयूवी के तौर पर Brezza को लाया जाता है। कंपनी की इस गाड़ी को इस महीने में खरीदने पर अधिकतम 35 से 45 हजार रुपये बचाए जा सकते हैं।

Maruti Ertiga

मारुति की सात सीटों वाली अर्टिगा पर भी इस महीने निर्माता की ओर से 10 हजार रुपये की बचत का मौका दिया जा रहा है।

सिट्रोएन ई स्पेसटॉरर : दमदार फीचर्स और जबरदस्त रेंज के साथ यह इलेक्ट्रिक MPV, क्या भारत में होगी लॉन्च?

परिवहन विशेष न्यूज

फ्रांस की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Citroen की ओर से भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से जल्द ही लग्जरी इलेक्ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में नई गाड़ी के तौर पर Citroen e-Spacetourer को लॉन्च किया जा सकता है। इसमें कैसे फीचर्स मिलते हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लग्जरी इलेक्ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में सिट्रॉएन की ओर से नई गाड़ी को लॉन्च किया जा सकता है। यह Citroen e-Spacetourer नाम से आ सकती है। इसमें किस तरह के फीचर्स और रेंज को दिया जाता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

भारत आ सकती है Citroen e-Spacetourer

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सिट्रॉएन की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को लॉन्च किया जा सकता है। जानकारी के मुताबिक इसे इलेक्ट्रिक लग्जरी एमपीवी सेगमेंट में लाया जा सकता है। इस गाड़ी को दुनिया के कई देशों में Citroen e-Spacetourer नाम से ऑफर किया जाता है।

ईवी वर्जन होगा पेश

कई देशों में इसे ICE वर्जन में भी ऑफर किया जाता है। लेकिन भारत में इसे सिर्फ ईवी सेगमेंट में ही लाया जा सकता है। हांलाकि अभी निर्माता की ओर से इस बारे में किसी भी तरह की जानकारी नहीं दी गई है।

क्या है खासियत

Citroen e-Spacetourer में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें 16 इंच स्टील रिम व्हील, ऑटो हेडलाइट्स, ऑटो वाइपर, ब्लूटूथ टेलीफोन कनेक्टिविटी, वायरलेस मिरर स्क्रीन, टाइप सी चार्जिंग पोर्ट, 10 इंच एचडी स्क्रीन, चार स्पीकर, चार ट्विटर ऑडियो सिस्टम, एसी, इलेक्ट्रिक और हीटेड डोर मिरर, 10 इंच इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, रियर पार्किंग असिस्ट, ट्विन स्लाइडिंग रियर डोर, एबीएस, ईबीडी, क्रूज कंट्रोल, हिल स्टार्ट असिस्ट, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, टीपीएमएस जैसे कई बेहतरीन फीचर्स दिए जाते हैं।

कितनी है रेंज

निर्माता की ओर से Citroen e-Spacetourer में 49 और 75 kWh की क्षमता की बैटरी के विकल्प दिए जाते हैं। जिससे इसे सिंगल चार्ज में 215 किलोमीटर से 455 किलोमीटर तक की रेंज दे सकती है।

कितनी होगी कीमत

निर्माता की ओर से अभी इसके लॉन्च को लेकर भी कोई जानकारी नहीं दी गई है। ऐसे में कीमत की जानकारी लॉन्च के बाद ही दी जा सकती है। फिलहाल इसे ब्रिटेन सहित कई यूरोपिय देशों में ऑफर किया जाता है। ब्रिटेन में इसकी कीमत 44.56 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की कीमत 64.69 लाख रुपये तक है।

किनसे होगा मुकाबला

अगर इसे भारत में लॉन्च किया जाता है तो इसका बाजार में MG M9 से सीधा मुकाबला होगा। इसके अलावा इसे BYD eMAX7 और Kia Carnival जैसी लग्जरी एमपीवी से भी चुनौती मिल सकती है।

टोयोटा अर्बन क्रूजर हाईराइडर का प्रेस्टीज पैकेज हुआ पेश, नई एक्सेसरीज से बेहतर होगी लुक

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Toyota की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से ऑफर की जाने वाली मिड साइज एसयूवी Toyota Urban Cruiser Hyryder के लिए नए Prestige Package को पेश कर दिया है। इस पैकेज में किस तरह की एक्सेसरीज को ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट में कई वाहनों को ऑफर करने वाली निर्माता Toyota की ओर से मिड साइज एसयूवी Toyota Urban Cruiser Hyryder के लिए Prestige Package को पेश कर दिया गया है। इस पैकेज में किस तरह की एक्सेसरी को दिया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

पेश हुआ Prestige Package

टोयोटा की अर्बन क्रूजर हाइराइडर एसयूवी को मिड साइज एसयूवी के तौर पर ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी के लिए निर्माता की ओर से प्रेस्टिज पैकेज को पेश कर दिया है। इस पैकेज में कई एक्सेसरीज को ऑफर किया गया है।

कौन सी एक्सेसरीज को किया गया ऑफर

निर्माता की ओर से प्रेस्टिज पैकेज में 10 अतिरिक्त एक्सेसरीज को ऑफर किया गया है। जिसमें डोर वाइज़र – प्रीमियम एसएस इंसर्ट के साथ, हुड प्रतीक, रियर डोर लिड गार्निश, फेंडर गार्निश, बॉडी क्लैडिंग, फ्रंट बम्पर गार्निश, हेड लैंप गार्निश, रियर बम्पर गार्निश, रियर लैंप गार्निश – क्रोम और बैक डोर गार्निश को दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स

टोयोटा की ओर से एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें प्रोजेक्टर एलईडी लाइट्स, एलईडी डीआरएल, ऑटो हेडलाइट, एलईडी टेल लैंप, हाई माउंट स्टॉप लैंप, रूफ रेल, रियर विंडो वाइपर और वॉशर, शॉर्क फिन एंटीना, ड्यूल टोन इंटीरियर, एंबिएंट लाइट्स, नौ इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, आर्किमिस ऑडियो सिस्टम, सात इंच इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, हेड-अप डिस्प्ले, क्रूज कंट्रोल, पैनोरमिक सनरूफ, वायरलेस चार्जर, ऑटो एसी, रियर एसी वेंट्स, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, पीएम 2.5 फिल्टर, की-लैस एंट्री जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

कितनी है कीमत

टोयोटा अर्बन क्रूजर हाइराइडर की एक्स शोरूम कीमत 11.34 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 20.19 लाख रुपये है।

किनसे होता है मुकाबला

Toyota की ओर से Hyryder को कंपनी चार मीटर से बड़ी एसयूवी के तौर पर ऑफर करती है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला Kia Seltos, Hyundai Creta, Honda Elevate, Maruti Grand Vitara, Mahindra XUV 700, Scorpio N जैसी SUVs के साथ होता है।

प्रभावी दैनिक आदतें जो छात्रों को उनकी स्मृति को तेज करने में मदद करती हैं

विजय गर्ग

पर्याप्त नींद लें: स्मृति और सीखने के लिए एक उचित रात की नींद आवश्यक है। छात्रों को हर रात 7 से 9 घंटे की नींद का लक्ष्य रखना चाहिए। नींद के दौरान, मस्तिष्क पूरे दिन सीखी गई जानकारी को संसाधित और संग्रहीत करता है। नींद की कमी से चीजों को ध्यान केंद्रित करना और याद करना मुश्किल हो सकता है, खासकर परीक्षा या पढ़ाई के दौरान।

ब्रेन फ्रेंडली फूड्स खाएं 2/10 ब्रेन फ्रेंडली फूड्स खाएं: मस्तिष्क बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों के साथ एक संतुलित आहार स्मृति का समर्थन कर सकता है। छात्रों को अपने भोजन में अखरोट, बादाम, हरी सब्जियां, जामुन और सामन जैसी मछली शामिल करनी चाहिए। ये खाद्य पदार्थ ओमेगा 3 फैटी एसिड, एंटीऑक्सिडेंट और विटामिन से भरपूर होते हैं जो मस्तिष्क के स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। जंक फूड और शुगर स्नैक्स से बचें, क्योंकि वे एकाग्रता को प्रभावित कर सकते हैं।

हाइड्रेटेड रहें 3/10 हाइड्रेटेड रहें: दिन के दौरान पर्याप्त पानी पीने से मस्तिष्क को सक्रिय और सतर्क रखने में मदद मिलती है। यहां तक कि मामूली निर्जलीकरण छात्रों को थका हुआ या अप्रभावित महसूस कर सकता है। एक पानी की बोतल को कक्षा में ले जाना और इसे पूरे दिन पीना एक साधारण आदत है जो स्मृति और सीखने को ट्रैक पर रहने में मदद करती है।

नियमित शारीरिक व्यायाम 4/10 नियमित शारीरिक व्यायाम: व्यायाम मस्तिष्क में रक्त के प्रवाह को बढ़ाता है और स्मृति में सुधार कर सकता है। यहां तक कि एक छोटी सैर, योग सत्र, या 20 मिनट की कसरत तनाव को कम करने और ध्यान बढ़ाने में मदद

करती है। छात्रों को जिम जाने की जरूरत नहीं है, सरल स्ट्रेचिंग या नियमित रूप से खेल खेलने से बड़ा फर्क पड़ सकता है।

एक्टिव रिकॉल का अभ्यास करें

एक्टिव रिकॉल का अभ्यास करें: नोट्स को फिर से पढ़ने के बजाय, छात्रों को मेमोरी से प्रमुख बिंदुओं को याद रखने की कोशिश करनी चाहिए। यह विधि, जिसे सक्रिय रिकॉल के रूप में जाना जाता है, दीर्घकालिक मेमोरी को मजबूत करती है। वे अपनी पुस्तकों को बंद कर सकते हैं और लिख सकते हैं कि उन्हें क्या याद है, फिर त्रुटियों की जांच करें। इस तकनीक के लिए फ्लैशकार्ड और क्विज़ भी मददगार हैं।

आप जो सीखते हैं उसे सिखाएं

आप जो सीखते हैं उसे सिखाएं: यह समझाते हुए कि आपने किसी और से क्या अध्ययन किया है, आपको इसे बेहतर याद रखने में मदद करता है। यह आदत मस्तिष्क को स्पष्ट रूप से जानकारी व्यवस्थित करने के लिए मजबूर करती है। छात्र एक सहपाठी, एक दोस्त, या यहां तक कि खुद से जोर से बोल सकते हैं। यह दिखाता है कि वे वास्तव में क्या समझते हैं और उन्हें क्या संशोधित करने की आवश्यकता है।

एक अध्ययन दिनचर्या का पालन करें

एक अध्ययन दिनचर्या का पालन करें: हर दिन अध्ययन करने के लिए एक निर्धारित समय और स्थान होने से अनुशासन बनता है और स्मृति में सुधार होता है। यह मस्तिष्क को उस अवधि के दौरान बेहतर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रशिक्षित करता है। छात्रों को फोन जैसी विकर्षणों से बचना चाहिए और बीच में कम ब्रेक लेना चाहिए। एक नियमित अध्ययन कार्यक्रम भी अंतिम मिनट के दबाव को कम करता है।

रोज पढ़ें

दैनिक पढ़ें: पढ़ना स्मृति, भाषा कौशल और समझ में सुधार करने में मदद करता है। इसमें केवल पाठ्यपुस्तकें नहीं होनी चाहिए, उपन्यास, लेख, या पत्रिकाएं भी काम करती हैं। पढ़ना शब्दावली बनाता है और मस्तिष्क को सक्रिय रखता है। कुछ सार्थक पढ़ने के लिए छात्रों को प्रतिदिन 15 से 30 मिनट अलग रखना चाहिए।

ध्यान करें और तनाव का प्रबंधन करें

तनाव का ध्यान और प्रबंधन करें: तनाव का उच्च स्तर स्मृति को अवरुद्ध कर सकता है और ध्यान को कम कर सकता है। रोजाना कुछ मिनटों तक ध्यान या गहरी सांस लेने का अभ्यास करने से मन शांत हो सकता है। छात्र नरम संगीत भी सुन सकते हैं, टहलने जा सकते हैं, या किसी से बात कर सकते हैं जब वे चिंतित महसूस करते हैं।

मल्टीटास्किंग से बचें: एक बार में कई काम करने की कोशिश मस्तिष्क को भ्रमित कर सकती है और स्मृति को कम कर सकती है। छात्रों को अक्सर स्विच किए बिना एक समय में एक विषय का अध्ययन करना चाहिए। एक कार्य पर ध्यान केंद्रित करने से मस्तिष्क को जानकारी को ठीक से अवशोषित करने और जरूरत पड़ने पर इसे याद करने में मदद मिलती है, खासकर परीक्षा में।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर

इंदिरा गांधी की इमरजेंसी बनाम संघ-भाजपा का अघोषित आपातकाल

(आलेख : संजय पराते)

इंदिरा गांधी द्वारा 50 वर्ष पहले 25 जून 1975 को देश में इमरजेंसी लगाए जाने के कृत्य को इतिहास ने ग़लत साबित कर दिया है। उस अंधकारमय दौर को देश की जनता आज भी भूली नहीं है, जब उसके नागरिक अधिकार निलंबित कर दिए गए थे। हालांकि यह इमरजेंसी संविधान के प्रावधानों का उपयोग करके ही लागू की गई थी, लेकिन आज कांग्रेस भी इसके औचित्य को साबित करने में अक्षम है।

इस थोपी गई तानाशाही के खिलाफ आम जनता का संघर्ष ही था, जिसने इस दौर को अतीत का विषय बना दिया। इस संघर्ष में लाखों लोगों ने यातनाएं सही, जेल गए। हजारों लोग भूमिगत हुए। उनके संघर्षों की कहानियां आज भी जीवित है। इन संघर्षों से आज की वर्तमान युवा पीढ़ी प्रेरणा लेती है।

लेकिन बहती गंगा में हाथ धोने वालों की भी कमी नहीं है। इनमें से एक है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ -- आरएसएस। इस संघी गिरोह का इतिहास आज सबको मालूम है। लेकिन संक्षेप में, दोहराव का खतरा मोल लेते हुए भी, इसका जिक्र कर देते है। 1925 में जब देश आजादी की लड़ाई लड़ रहा था, इस देश को हिंदू राष्ट्र बनाने के उद्देश्य से इस संगठन की स्थापना की गई थी। आजादी की लड़ाई से यह संगठन न केवल अलग रहा, बल्कि अपनी सांप्रदायिक राजनीति को आगे बढ़ाने के लिए अंग्रेजों की 'फूट डालो' नीति का सहयोगी रहा। इसलिए इनके पास कहने के लिए भी एक भी स्वाधीनता सेनानी नहीं है। जो हो सकते थे, वे सावरकर अंग्रेजों से माफी मांगकर काला पानी की सजा से मुक्त हो गए, अंग्रेजों से पेंशन ली और फिर इस माफ़ीवीर ने कभी इस संघर्ष में हिस्सा नहीं लिया। दूसरे कथित सेनानी अटल बिहारी बाजपेयी की अंग्रेजों की मुखबिरी करने के दस्तावेजी प्रमाण मौजूद है। यही संघी गिरोह था, जिसने धार्मिक आधार पर 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' की हिमायत करते हुए देश के विभाजन की नींव रखने में मुस्लिम लीग के साथ सहयोग का काम किया। आजादी के बाद भी इसने संविधान से लेकर तिरंगे तक और आजादी के आंदोलन से स्थापित तमाम प्रतीकों का विरोध किया। देश को आधुनिकता के रास्ते पर बढ़ाने के बजाए दंगा-फसादों के रास्ते पर बढ़ाने की कोशिश की।

इंदिरा गांधी के इमरजेंसी के बारे में भी इनका इतिहास इतना ही काला है। इस दौर के इनके सुप्रीम नेता बाला साहब देवरस के इंदिरा गांधी को लिखे माफीनामे और उनके 20 सूत्रीय और संजय गांधी के 5 सूत्रीय कार्यक्रम के साथ सहयोग करने की चिट्ठियां अब सार्वजनिक है। यही कारण है कि जब उस समय के अधिकांश राजनेता जेलों में ठूंसे जा रहे थे, संघी गिरोह से जुड़े नेता माफीनामा लिखकर जेलों से बाहर आ रहे थे और अंग्रेजों के मुखबिर अटल बिहारी जेल के बजाय अस्पताल में आराम फरमा रहे थे। सुब्रह्मण्यम स्वामी सहित संघ-भाजपा के कई नेताओं ने ही संघ के इस विश्वासघात का लिखित तौर पर पर्दाफाश किया है।

सत्ता और गोदी मीडिया का सहारा लेकर आज संघी गिरोह आम जनता से विश्वासघात के अपने काले इतिहास को धोने-पोंछने और नए रंग-रोगन में पेश करने में लगा है। इसमें एक

काला इतिहास उस इमरजेंसी का भी है, जिसका जिक्र हम ऊपर कर चुके हैं और जो इंदिरा गांधी के दमन-राज के सामने उनके संपूर्ण आत्मसमर्पण का इतिहास है। आज वे अपने आपको, सावरकर की तरह ही, इमरजेंसी के खिलाफ संघर्ष का वीर योद्धा साबित करते हुए मनगढ़ंत कहानियां सुना रहे हैं और सरकारी पेंशन लेकर मजे मार रहे हैं। लेकिन इंदिरा गांधी की इमरजेंसी के समर्थन में संघ के जो दस्तावेजी प्रमाण सामने आए हैं, उसका आधिकारिक तौर पर आज तक आरएसएस ने खंडन नहीं किया है।

जिस इमर्जेंसी के खिलाफ संघी गिरोह वीर-योद्धा बनने का आज दावा कर रहा है, उसके पिछले एक दशक के राज की हालत क्या है? आज हम जिस अघोषित आपातकाल का सामना कर रहे हैं, उसका अनुभव घोषित इमरजेंसी से भी ज्यादा बुरा है। और यह हम नहीं, मोदी द्वारा मार्गदर्शक मंडल में धकेले गए ₹डबल वेटिंग प्राइम मिनिस्टर₹ वर्ष 2015 में ही कह गए थे। 'इंडियन एक्सप्रेस' (26-27 जून, 2015) के शेखर गुप्ता को दिए एक साक्षात्कार में लालकृष्ण आडवानी ने कहा था ''अब आपातकाल की घोषणा के बाद 40 साल बीत चुके हैं। लेकिन पिछले एक साल से भारत में एक अघोषित आपातकाल लागू है।''

तब से दस साल गुजर चुके हैं। इंदिरा गांधी ने इमरजेंसी में तो केवल नागरिक अधिकारों को ही निलंबित किया था, संघ-भाजपा के राज में तो मानवाधिकारों को ही कुचलकर रख दिया गया है और कानून का राज खत्म हो गया है। कानून अब वही है, वहीं तक सीमित है, जो संघ-भाजपा की हिंदू राष्ट्र की विचारधारा को आगे बढ़ाएं। आज अभिव्यक्ति की आजादी को

पूरी तरह कुचल दिया गया है। वैश्विक एजेंसियों ने भी दर्ज किया है कि पिछले दस सालों में मानव विकास सूचकांकों के मामले में, प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में, धार्मिक स्वतंत्रता के मामले में, मानवाधिकारों के मामले में और आर्थिक समानता के मामले में भारत में भारी गिरावट आई है। इसकी अभिव्यक्ति माओवाद के नाम पर आदिवासियों के संवैधानिक अधिकारों को कुचलने और जल, जंगल, जमीन जैसे प्राकृतिक संसाधनों को कॉरपोरेटों को सौंपने की मुहिम में ; अल्पसंख्यकों के खिलाफ लव जिहाद, गौ-मांस खाने-रखने, धर्मांतरण करवाने जैसे छद्म अभियानों में ; अल्पसंख्यकों, कमजोर वर्गों और दलित-दमित तबकों के बुलडोजर न्याय में ; कई प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ताओं और बुद्धिजीवियों को बिना सुनवाई जेलों में ठूंसे जाने और उन पर राष्ट्रद्रोह का लेबल लगाने में ; महाराष्ट्र के बाद अब बिहार के विधानसभा चुनाव का फर्जीकरण करने की साजिशों में अभिव्यक्त हो रही है। यही कारण है कि वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र-सूचकांक के मामले में भारत की स्थिति में लगातार गिरावट दर्ज हो रही है और इसे फ्लॉड डेमोक्रेसी का दर्जा दिया जा रहा है। आम जनता का सामान्य अनुभव अब यही है कि उसके वोटों से निर्वाचित यह सरकार उसके हितों का प्रतिनिधित्व करने के बजाए हिंदुत्व और कॉर्पोरेट के गठजोड़ को आगे बढ़ा रही है और अडानी-अंबानी जैसे चंद कॉर्पोरेट घरानों की प्रतिनिधि सरकार होकर रह गई है, जिसका हर कदम, हर निर्णय उसके व्यापारिक हितों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से होता है।

जिस तरह इंदिरा गांधी की घोषित इमरजेंसी को यहां की आम जनता ने मात दी थी, उसी प्रकार संघ-भाजपा के अघोषित आपातकाल को भी यहां की जनता ही मात देगी। लेकिन इस जनता को लामबंद करने में भाजपा विरोधी पार्टियों की एकजुटता महत्वपूर्ण है। चुनाव आयोग के जरिए बिहार विधानसभा के चुनाव का फर्जीकरण करने की संघ-भाजपा जो साजिश कर रही है, वह इसका अवसर दे रही है। भाजपा विरोधी सभी राजनैतिक ताकतों, संगठनों, संस्थाओं और व्यक्तियों को अतीत की इमरजेंसी से सबक लेकर वर्तमान के अघोषित आपातकाल से आगे का भविष्य देख लेना चाहिए और सर्वनाशी आसन्न संकट की आवाज को सुनकर चुनौतियों को स्वीकार करना चाहिए।

(लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं

ब्रेन हेल्थ और एजिंग की समझ

विजय गर्ग

वयस्क मानव हिप्पोकैम्पस में बनने वाले नए न्यूरॉन्स, जैसा कि कारोलिंस्का संस्थान के ग्राउंडब्रेकिंग अनुसंधान में देखा गया है। क्या वयस्क दिमाग नए न्यूरॉन्स बना सकता है? एक नया अध्ययन कुछ निश्चित साक्ष्य सामने लाता है जो यह संभव है। वर्षों से, नए न्यूरॉन्स बनाने के लिए वयस्क मानव मस्तिष्क की क्षमता तंत्रिका विज्ञान में विवाद का विषय रही है। हालांकि, अब शोधकर्ताओं ने आखिरकार दशकों पुरानी बहस को सुलझा लिया होगा।

स्वीडन के स्टॉकहोम के कारोलिंस्का इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने हाल ही में वयस्क मानव हिप्पोकैम्पस में न्यूरल प्रोजेनिटर्स के प्रसार की पहचान शीर्षक से एक अध्ययन में वयस्कों के हिप्पोकैम्पस क्षेत्र में तंत्रिका स्टेम कोशिकाओं के बढ़ने के संकेत मिले । इस खोज से पता चलता है कि जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, हमारा दिमाग कैसे विकसित होता है। शोधकर्ताओं के अनुसार, इसके साथ न्यूरोलॉजिकल विकारों के इलाज के नए तरीके खोजने की संभावना है।

न्यूरॉन विकास या न्यूरोजेनेसिस, हिप्पोकैम्पस में होता है, जो मानव मस्तिष्क का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस क्षेत्र के कारण भावनाओं को सीखने, याद रखने और महसूस करने की क्षमता संभव है। करोलिंस्का इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं में से एक मार्टा पैटरलिनी ने लाइव साइंस को बताया कि उनका शोध इस बारे में लंबे समय से चली आ रही बहस को आराम देता है कि क्या वयस्क मानव दिमाग नए न्यूरॉन्स विकसित कर सकता है।

अध्ययन के लिए, शोधकर्ताओं ने 78 वर्ष की आयु तक के लोगों से मस्तिष्क के ऊतकों का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि तंत्रिका पूर्वज कोशिकाएं हिप्पोकैम्पस क्षेत्र में विभाजित हो रही थीं। उन्होंने विकास के विभिन्न चरणों में कोशिकाओं की पहचान करने के लिए एकल-नाभिक आरएनए अनुक्रमण और मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करके 400,000 से अधिक व्यक्तिगत सेल नाभिक का अध्ययन किया। टीम ने एक ही स्थान पर पूरी तरह से गठित तंत्रिका कोशिकाओं के बगल में बैठे अग्रदूत कोशिकाओं को विभाजित करते हुए देखा, जहां पशु अध्ययन ने वयस्क स्टेम कोशिकाओं को जीवित दिखाया है।

एक तकनीक के साथ जांच किए गए 14 वयस्क दिमाग में से नौ ने न्यूरोजेनेसिस के संकेतों का प्रदर्शन किया, जबकि 10 में से 10 दिमाग ने दूसरी विधि के साथ जांच की, जिसमें नए सेल गठन के सबूत दिखाए गए। मशीन लर्निंग का उपयोग करके निर्मित फ्लोरोसेंट टैग और एल्गोरिदम का उपयोग करके भविष्य के न्यूरोजेनिक स्टेम कोशिकाओं की पहचान की गई थी।

कथित तौर पर, 1998 में शोधकर्ताओं ने प्रायोगिक उपचार से गुजरने वाले कैंसर रोगियों से ऊतक का उपयोग करके वयस्क मानव दिमाग में नए न्यूरॉन्स की पहचान की। बाद में कार्बन -14 डेटिंग और अन्य तरीकों का उपयोग करके अध्ययन करने से कुछ परस्पर विरोधी परिणाम हुए। करोलिंस्का इंस्टीट्यूट की इसी टीम ने 2013 में इसी तरह का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि न्यूरोजेनेसिस जीवन भर होता है। हालांकि, नवीनतम शोध तक इस मामले पर बहस जारी रही।

डॉक्टर बनाम सैलून: भारतीय डॉक्टर बाल कटवाने से कम शुल्क लेते हैं

विजय गर्ग

यह एक दिलचस्प तुलना है जो भारत में अलग-अलग आर्थिक वास्तविकताओं पर प्रकाश डालती है! हालांकि यह दुनिया के कुछ हिस्सों में उल्टा लग सकता है, इस कथन के लिए कुछ सच्चाई है कि एक भारतीय डॉक्टर के परामर्श पर कभी-कभी बाल कटवाने से कम खर्च हो सकता है, खासकर अधिक अपस्केल सैलून में। यहाँ इस बात का टूटना है कि यह मामला क्यों हो सकता है: भारत में डॉक्टर का परामर्श शुल्क:

वाइड रेंज: भारत में डॉक्टर परामर्श शुल्क शहर, डॉक्टर के अनुभव, उनकी विशेषज्ञता और क्लिनिक के प्रकार (सरकारी, निजी, छोटे क्लिनिक, बड़े अस्पताल) के आधार पर काफी भिन्न होते हैं।

अफोर्डेबिलिटी फोकस: हेल्थकेयर, विशेष रूप से बुनियादी परामर्श, अक्सर भारत में अपेक्षाकृत सस्ती रखा जाता है, विशेष रूप से छोटे शहरों और स्थानीय क्लीनिकों में, एक बड़ी आबादी के लिए पहुंच सुनिश्चित करने के लिए।

उदाहरण:

कुछ परामर्श बहुत स्थानीय सेटिंग्स में ₹ 50-₹ 100 के रूप में कम शुरू कर सकते हैं।

औसत शुल्क कई शहरों में ₹ 300-₹ 800 से हो सकता है।

प्रमुख शहरों में विशेषज्ञ परामर्श ₹ 1000- and 2000 तक जा सकते हैं, और बहुत उच्च-अंत परिदृश्यों में, यहां तक कि उच्च भी। भारत में बाल कटवाने की कीमतें:

विविध विकल्प: हेयरकट की कीमतों में एक विशाल रेंज भी होती है, जो बहुत सस्ती स्थानीय नाइयों से लेकर उच्च अंत सैलून तक होती है।

स्थानीय नाई: एक स्थानीय नाई की दुकान पर एक बुनियादी पुरुषों के बाल कटवाने पर ₹ 50-₹ 150 जितना कम खर्च हो सकता है।

मिड-रेंज सैलून: सभ्य स्थानीय सैलून में बाल कटाने पुरुषों के लिए ₹ 200-₹ 500 की सीमा में हो सकते हैं और महिलाओं के लिए काफी अधिक (अक्सर ₹ 300-₹ 800 से शुरू होते हैं और स्टाइल कट, वॉश और ब्लो-ड्रीज़ के लिए बहुत अधिक जा रहे हैं)।

हाई-एंड सैलून: लक्जरी या ब्रांडेड सैलून (जैसे टोनी एंड गाइ, नेचुरल्स, आदि) में, एक पुरुषों के बाल कटवाने में आसानी से ₹ 700- and 1700 खर्च हो सकते हैं, और महिलाओं के बाल कटाने ₹ 800- and 1000 से शुरू हो सकते हैं और रचनात्मक या निर्देशक स्टाइलिस्ट के लिए for 2500 या अधिक तक जा सकते हैं। तुलना: इन श्रेणियों के आधार पर, यह पूरी तरह से प्रशंसनीय है कि एक स्थानीय क्लिनिक में एक बुनियादी डॉक्टर का परामर्श वास्तव में एक मध्य-सीमा या उच्च-अंत सैलून में बाल कटवाने से सस्ता हो सकता है। उदाहरण के लिए:

₹ 200-₹ 300 के लिए एक डॉक्टर की यात्रा आम है।

एक अच्छे सैलून में ₹ टॉप स्टाइलिस्ट₹ पर एक बाल कटवाने पुरुषों के लिए ₹ 900 या महिलाओं के लिए ₹1300 हो सकता है। इस घटना में योगदान देने वाले कारक:

हेल्थकेयर में स्केल की अर्थव्यवस्थाएं: भारत में डॉक्टर अक्सर रोगियों की एक बहुत अधिक मात्रा देखते हैं, जो उन्हें व्यक्तिगत परामर्श शुल्क कम रखने की अनुमति देता है।

बुनियादी परामर्श के लिए लोअर ओवरहेड: एक साधारण डॉक्टर के परामर्श के लिए हमेशा व्यापक उपकरण या बुनियादी ढांचे की आवश्यकता नहीं होती है।

मार्केट डायनेमिक्स: सौंदर्य और सौंदर्य उद्योग,

विशेष रूप से उच्च अंत में, अक्सर उच्च ओवरहेड्स (प्रमुख स्थानों में किराए, महंगे उत्पादों, स्टाइलिस्ट, सैलून सजावट, विपणन के लिए विशेष प्रशिक्षण) के साथ संचालित होता है और एक ग्राहक को पूरा करता है जो भुगतान करने के लिए तैयार है प्रीमियम अनुभव।

अनुमानित मूल्य: जबकि स्वास्थ्य सेवा आवश्यक है, एक स्टाइलिश बाल कटवाने या सैलून अनुभव को अक्सर एक विवेकाधीन खर्च के रूप में देखा जाता है, और लोग सौंदर्य परिणाम और लाड़ के लिए अधिक भुगतान करने के लिए तैयार हो सकते हैं। इसलिए, जबकि यह एक सामान्यीकरण है, बयान पूरे भारत में कई विशिष्ट परिदृश्यों में सच है, विभिन्न सेवा क्षेत्रों में लागत, मांग और कथित मूल्य के जटिल इंटरप्ले को दर्शाता है।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

झूले वाले दिन आए

झूले वाले दिन आए

झूले वाले दिन आए, पायल की छनकार,
घूँघट में लजाए सावन, रंग भरे हज़ार।
काजल भीगे नैना, मेंहदी रचती हाथ,
सखियाँ गाएं गीत वो, जिसकी हो तलाश।

पलाश और आम की, डालें हुईं जवाँ,
झूले संग लहराए, मन की हर दुआ।
बरखा की चूनर ओढ़े, धरती की ये माँ,
हरियाली की चिट्ठियाँ, लेकर आई हवा।

पथिक रुके हैं थमकर, सुनने बादल गीत,
पगली नदी भी झूमें, बाँधें जल की रीत।
बंसी फिर से बोले, कान्हा पुकारे राधा,
मन मंदिर में बजे हैं, प्रेम भरे प्रभादा।

झूले वाले दिन आए, हर मन रंग जाए,
चुनरी सी उड़ती ख़ुशियाँ, कोई रोक न पाए।
मौसम का ये तावीज़, बाँधे रिश्तों को पास,
सावन जैसे हर जन को, दे प्रेम का प्रकाश।

अब के सावन में

अब के सावन में
बूँदें सिर्फ़ पानी नहीं रहीं,
वो सवाल बनकर गिरती हैं
छतों, छायाओं और चेतना पर।

अब के सावन में
न कोई प्रेम पत्र भीगा,
न कोई हथेली मेंहदी से लिपटी,
बस मोबाइल स्क्रीन पर टपकी बारिश की रील।

अब के सावन में
कविताएं भीगने से डरती हैं,
काग़ज़ गल जाए तो?
या भाव उड़ जाए तो?

पर फिर भी,
जब एक बूँद चुपचाप
मेरी खिड़की पर टिकती है,
मैं जानती हूँ—
भीतर का सावन अब भी जीवित है।

सावन की सिसकी

भीग गया मन फिर चला, तेरी यादों की ओर,
सावन ने फिर छेड़ दिया, वो भीगा सा शोर।
टपक रही हर साँझ में, कुछ अधूरी बात,
छत पर बैठी पाती पढ़े, भीगी-भीगी रात।

झूला झूले याद में, पीपल की वह छाँव,
तेरे संग सावन जिया, अब लगता बेजान।
बूँद-बूँद में नाम तेरा, भीगा पत्र पुराना,
तेरे बिना हर मौसम में, खालीपन का गाना।

चाय की प्याली अकेली, खिड़की की तन्हाई,
भीतर गूंजे सावन, बाहर बारिश आई।
भेज रहा हूँ हवा से, फिर इक संदेश,
रतेरा इंतज़ार अब भी है, सावन का ये वेश।

भाषा न बने कभी भी राजनीतिक हथियार !

हाल ही में महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख राज ठाकरे ने यह बात कही है कि 'राज्य सरकार द्वारा लागू किया गया त्रिभाषा फॉर्मूला मुंबई को महाराष्ट्र से अलग करने की उसकी योजना का संकेत था।' पाठकों को बताता चलूं कि दो दशक के बाद उद्धव और राज ने सार्वजनिक मंच साझा करते हुए 'आवाज मराठीचा' नामक एक विजय सभा का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य राज्य के स्कूलों में कक्षा एक से तीसरी भाषा के रूप में हिंदी को शामिल करने संबंधी सरकार द्वारा पूर्व में जारी किए गए दो सरकारी आदेशों को वापस लेने का जश्न मनाना था। वास्तव में, यह बहुत ही दुखद है कि महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के प्रमुख राज ठाकरे द्वारा त्रिभाषा फार्मूले द्वारा मुंबई को महाराष्ट्र से अलग करने की योजना का आरोप लगाया गया है। हालांकि, इससे और भी अधिक दुखद बात यह है कि राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे, हिंदी को अनिवार्य बनाने के फैसले के विरोध में मार्च तक निकालने की तैयारी में थे। दरअसल, उद्धव ने अपने संबोधन में कहा कि हम किसी को धमकाएंगे नहीं, लेकिन उनको भी बर्दाश्त नहीं करेंगे जो हमें धमकाते हैं। उन्होंने सभी मराठियों को एक साथ आने, मराठियों की पहचान को मिटना नहीं चाहिए जैसी बातें कहीं, जबकि राज ने मराठी को अपना एकमात्र एजेंडा बताते हुए यह बात कही है कि, हम महाराष्ट्र को बंटता हुआ नहीं देखना चाहते। हाल फिलहाल, दोनों ठाकरे पुराने मतभेदों को मिटाकर एक साथ काम करते नजर आ रहे हैं, लेकिन इसे शुद्ध राजनीतिक लाभ के लिए उठाया गया कदम ही माना जा रहा है। यह बहुत दुखद है कि आज देश में भाषा के नाम पर राजनीति हो रही है। भाषा के नाम पर राजनीति को किसी भी लिहाज से ठीक नहीं ठहराया जा सकता है और वह भी हिंदी भाषा के नाम पर। यहां पाठकों को बताता चलूं कि त्रिभाषा सूत्र, भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित एक शिक्षा नीति है, जिसका उद्देश्य छात्रों को तीन भाषाएँ सीखने, जिनमें पहली भाषा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा होती है, दूसरी भाषा हिंदी भाषी राज्यों में एक आधुनिक भारतीय या विदेशी भाषा, और गैर-हिंदी भाषी

राज्यों में हिंदी या अंग्रेजी होती है, और तीसरी भाषा हिंदी भाषी राज्यों में अंग्रेजी या एक आधुनिक भारतीय भाषा, और गैर-हिंदी भाषी राज्यों में अंग्रेजी या एक आधुनिक भारतीय भाषा होती है, के प्रोत्साहन पर जोर दिया गया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि त्रिभाषा सूत्र का मुख्य उद्देश्य छात्रों में बहुभाषावाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना है। यह त्रिभाषा सूत्र 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पेश किया गया था और 2020 की नई शिक्षा नीति में भी इसे बरकरार रखा गया है। गौरतलब है कि कुछ समय पहले ही 26 जून 2025 को ही राजभाषा विभाग के 50 साल पूरे होने पर स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान हमारे देश के केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह जी ने यह बात कही थी कि
हिंदी किसी भी भारत की विरोधी नहीं है। उस समय उन्होंने यह स्पष्ट तौर पर यह कहा था कि हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की सखी या दोस्त रही है।
बहरहाल, यह दुखद ही है कि आज हमारे देश के राजनेता भाषा के नाम पर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकते हैं लेकिन उनको यह बात कदापि नहीं भूलनी चाहिए कि मात्र भाषा के मुद्दे से देशवासियों को प्रभावित कर पाना आसान नहीं है। वास्तव में भाषा, वेशभूषा या रहन-सहन के आधार पर देश को बांटा जाना किसी भी हाल और परिस्थितियों में उचित व जायज नहीं कहा जा सकता है। हिंदी तो भारत की आन-बान और शान के साथ ही राष्ट्रीय एकता और अखंडता की प्रतीक रही है। यही वह भाषा है जो पूरे देश को कश्मीर से कन्याकुमारी तक एकजुट रखें हुए है। करीब बीस सालों बाद उद्धव और राज ठाकरे, दोनों का एक मंच पर आना और मराठी अस्मिता के नाम पर हिंदी विरोध का झंडा बुलंद करना अपनी राजनीतिक प्रासंगिकता को बनाए रखने की एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा ही प्रतीत होता है, जो कभी कामयाब नहीं हो पाएगा। मराठी हो या देश की कोई भी भाषा, सभी भाषाएं अपने आप में अच्छी हैं, लेकिन हिंदी को हमारे देश की राजभाषा के साथ ही मातृभाषा का दर्जा प्राप्त है। पाठकों को बताता चलूं कि भारत के संविधान में हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है। हमारे देश के संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधान हैं तथा अनुच्छेद 343(1) में कहा गया है कि संघ की राजभाषा हिंदी होगी और लिपि देवनागरी होगी। पाठक जानते होंगे कि संविधान ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। हाल फिलहाल, ठाकरे बंधुओं ने केंद्र की शिक्षा नीति को निशाना बनाया, जिसमें हिंदी को तीसरी भाषा के रूप में शामिल करने का प्रस्ताव है। हालांकि, उनकी रैली से पहले ही सरकार ने तीन भाषा नीति से जुड़े अपने आदेश वापस ले लिए, लेकिन फिर भी रैली का आयोजन किया गया, तो इसकी वजह राजनीतिक ही कही जा सकती है। हाल फिलहाल कहना ग़लत नहीं होगा कि राजनीतिज्ञों को यह चाहिए कि वे राजनीतिक अवसरवाद से बचें। उन्हें यह बात समझनी चाहिए कि आज जनता बहुत समझदार है और भाषा अस्मिता के नाम पर कभी भी वोट नहीं मिलते हैं। किसी भी राजनीतिक दल या उसके नेता को यह चाहिए कि वे भाषा को कभी भी राजनीतिक हथियार नहीं बनाएं।हिंदी को थोपा गया बताकर ठाकरे बंधु जिस तरह का व्यवहार कर रहे हैं, वह भ्रामक होने के साथ देश की राष्ट्रीय एकता व अखंडता को भी नुकसान पहुंचा सकता है। वास्तव में, स्वभाषा प्रेम, स्वदेश प्रेम और स्वावलंबन आदि ऐसे गुण हैं जो प्रत्येक मनुष्य में होने चाहिए। कोई भी राजनीतिक दल और उनके नेता अपनी-अपनी भाषाओं से प्यार करें, उन्हें सहृदयता से अपनाएं, कोई दिक्कत नहीं है लेकिन हिंदी का विरोध न करें, क्यों कि भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हिन्दी भाषा कुछ न कुछ सर्वत्र समझी जाती है। कोई भी मनुष्य सदा अपनी मातृभाषा में ही विचार करता है। इसलिए अपनी भाषा सीखने में जो सुगमता होती है दूसरी भाषा में हमको वह सुगमता नहीं हो सकती। हिंदी हमारी मातृभाषा है और इसमें हर देशवासी को सुगमता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि निस्संदेह हिंदी भारत की संपर्क भाषा है, जिसे अधिसंख्य जनता समझती है। हिंदी की ऐसी स्वाभाविक स्वीकार्यता के बावजूद उसे खतरे के रूप में पेश करना तर्कसंगत नहीं दिखता।भाषा ही वास्तव में किसी राष्ट्र का असली जीवन होती है और वह जीवन 'हिंदी' ही है। भाषा के नाम पर संकीर्ण राजनीति करना ठीक नहीं है। वैसे भी इतिहास इस बात का गवाह है कि संकीर्ण क्षेत्रीयता और भाषाई उन्माद लंबे समय तक टिकते हैं। राजनेताओं को यह चाहिए कि वे इस बात को भली-भांति समझें कि बिना मातृभाषा की उन्नति के देश का गौरव कदापि वृद्धि को प्राप्त नहीं हो सकता और हिंदी हमारे देश की मातृभाषा है। अंत में यही कहूंगा कि आम जनता को भी यह चाहिए कि वह ऐसी विभाजनकारी राजनीति को सिरे से नकारे, क्योंकि भाषा जोड़ने का माध्यम होनी चाहिए, न कि समाज को तोड़ने का औजार। ऊपर कह चुका हूं कि भाषाएं सभी अच्छी हैं। कोई भी भाषा बुरी नहीं होती। नेताओं को अपने राजनीतिक स्वार्थ से ऊपर उठकर देश हित में काम करने की जरूरत है, न कि भाषा के नाम पर राजनीति करने की जरूरत है। हिंदी का किसी भी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है। सेठ गोविंददास कहते हैं कि -'देश को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है और वह भाषा है हिन्दी।'

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

मध्यप्रदेश से उठी आवाज़ – नारी को मिली नई परवाज़

मध्यप्रदेश सरकार ने एक क्रांतिकारी और दूरदर्शी कदम उठाते हुए महिलाओं और युवतियों के लिए रात की पाली में कार्य करने के द्वार खोल दिए हैं। यह निर्णय न केवल लैंगिक समानता की दिशा में एक ऐतिहासिक छलांग है, बल्कि यह भारत के सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य को नया आकार देने का एक साहसिक संकल्प भी है। मध्यप्रदेश दुकान एवं स्थापना अधिनियम, 1958 और कारखाना अधिनियम, 1948 के अंतर्गत यह अनुमति प्रदान की गई है, जिसके तहत महिलाएं कारखानों में रात 8 बजे से सुबह 6 बजे तक और दुकानों तथा वाणिज्यिक संस्थानों में रात 9 बजे से सुबह 7 बजे तक अपनी प्रतिभा और परिश्रम का परचम लहरा सकेंगी। मुख्यमंत्री मोहन यादव के नेतृत्व में लिया गया यह फैसला नारी सशक्तीकरण का एक चमकता सितारा है, जो यह सिद्ध करता है कि महिलाएं किसी भी समय, किसी भी क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश के विकास में योगदान दे सकती हैं। यह कदम न केवल मध्यप्रदेश की प्रगतिशील सोच को उजागर करता है, बल्कि यह भी संदेश देता है कि भारत की नारी शक्ति अब हर चुनौती को स्वीकार करने के लिए तैयार है।

यह निर्णय उन असंख्य महिलाओं के लिए एक स्वर्णिम अवसर है, जो आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की राह पर चलना चाहती हैं। आज का युग, जब वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति ने 24x7 कार्य संस्कृति को जन्म दिया है, महिलाओं को रात की पाली में कार्य करने की अनुमति एक ऐसी मशाल है, जो उनके लिए उन क्षेत्रों को रोशन करती है, जो पहले समय की बंदिशों के कारण दुर्गम थे। सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवाएं, आतिथ्य, और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में रात की पाली की मांग बढ़ रही है। मध्यप्रदेश सरकार का यह कदम इन क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगा, जिससे न केवल उनकी आय में वृद्धि होगी, बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था भी सशक्त होगी। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के 2022-23 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर मात्र 37% है, जो पुरुषों की तुलना में काफी कम है। मध्यप्रदेश का यह कदम इस अंतर को पाटने की दिशा में एक ठोस प्रयास है, जो नारी शक्ति को आर्थिक मुख्यधारा में लाने का एक शानदार उदाहरण है।

इस निर्णय की सबसे प्रशंसनीय बात यह है कि इसे लागू करने में महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। सरकार ने सख्त नियमों और शर्तों के साथ यह सुनिश्चित किया है कि कार्यस्थल पर महिलाएं न केवल सुरक्षित रहें, बल्कि सम्मान और आत्मविश्वास के साथ कार्य कर सकें। कारखानों और वाणिज्यिक संस्थानों में रात की पाली में काम करने के लिए नियोजकों को महिलाओं की लिखित सहमति लेना अनिवार्य है, और कम से कम पांच महिलाओं के समूह में ही उन्हें कार्य पर लगाया जा सकेगा। यह प्रावधान यह सुनिश्चित करता है कि महिलाएं एकजुटता और आत्मविश्वास के साथ कार्य करें। लैंगिक उत्पीड़न अधिनियम, 2013 का पूर्ण पालन, सुरक्षित कार्य वातावरण, शौचालय, वॉशरूम, पेयजल, और विश्राम कक्ष जैसी मूलभूत सुविधाएं अनिवार्य की गई हैं। सुपरवाइजरी स्टाफ का एक-तिहाई हिस्सा महिलाओं का होना और महिला सुरक्षाकर्मियों की तैनाती जैसे कदम यह दर्शाते हैं कि सरकार ने सुरक्षा के हर पहलू पर गहन विचार किया है। ये उपाय न केवल महिलाओं को आत्मविश्वास प्रदान करते हैं, बल्कि नियोजकों को भी जवाबदेही का महत्व समझाते हैं।

हालांकि, इस प्रगतिशील कदम के साथ कुछ सावधानियों पर भी ध्यान देना आवश्यक है। रात की पाली में काम करने वाली महिलाओं की सुरक्षा और स्वास्थ्य को सुनिश्चित करना सबसे बड़ी चुनौती है। नियमों का प्रभावी कार्यान्वयन और उनकी निगरानी के लिए एक मजबूत तंत्र स्थापित करना समय की मांग है। नियमित निरीक्षण, त्वरित शिकायत निवारण प्रणाली, और पारदर्शी जवाबदेही सुनिश्चित करना होगा, ताकि किसी भी प्रकार की अनियमितता या उत्पीड़न की स्थिति में तुरंत कार्रवाई हो सके। रात की पाली का स्वास्थ्य पर प्रभाव, जैसे नींद की कमी, मानसिक तनाव, और शारीरिक थकान, भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। नियोजकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि महिलाओं को पर्याप्त विश्राम समय, स्वास्थ्य सुविधाएं, और सुरक्षित परिवहन की व्यवस्था उपलब्ध हो। विशेष रूप से, रात के समय सुरक्षित आवागमन की व्यवस्था एक अनिवार्य आवश्यकता है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

मध्यप्रदेश का यह निर्णय अन्य राज्यों के लिए एक प्रेरणादायी मॉडल है। भारत के प्रत्येक राज्य को ऐसी नीतियां अपनानी चाहिए, जो महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ उनकी सुरक्षा और सम्मान को प्राथमिकता दें। कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों ने पहले ही कुछ क्षेत्रों में रात की पाली में महिलाओं को कार्य करने की अनुमति दी है, और उनके अनुभवों से सीखकर अन्य राज्य इस दिशा में और प्रभावी कदम उठा सकते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर एक समान नीति का निर्माण, जो राज्यों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार लचीलापन प्रदान करे, इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। यह नीति न केवल महिलाओं को आर्थिक अवसर प्रदान करेगी, बल्कि सामाजिक स्तर पर लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ने में भी मदद करेगी।

इस निर्णय का सामाजिक प्रभाव भी गहरा और दूरगामी होगा। जब महिलाएं रात की पाली में आत्मविश्वास के साथ कार्य करती दिखेंगी, तो यह समाज के लिए एक शक्तिशाली संदेश होगा कि नारी शक्ति किसी भी समय और किसी भी क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा सकती है। यह युवा लड़कियों के लिए एक प्रेरणा बनेगा, जो अपने करियर में बड़े सपने देखती हैं। साथ ही, यह परिवारों और समुदायों में महिलाओं के प्रति सम्मान और विश्वास को और मजबूत करेगा। यह कदम सामाजिक मानसिकता में बदलाव लाने का एक सशक्त माध्यम बनेगा, जो लैंगिक समानता की नींव को और मजबूत करेगा।

मध्यप्रदेश सरकार की इस पहल की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इसे कितनी गंभीरता और पारदर्शिता के साथ लागू किया जाता है। सरकार को चाहिए कि वह इस नीति की नियमित समीक्षा करे, महिलाओं, नियोजकों, और श्रम विभाग के अधिकारियों के साथ निरंतर संवाद बनाए रखे, और कार्यस्थल पर सुरक्षा और सुविधाओं के मानकों को कड़ाई से लागू करे। इसके साथ ही, महिलाओं को उनके अधिकारों और इस नीति के तहत उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जागरूक करने के लिए व्यापक अभियान चलाए जाने चाहिए। यदि यह नीति प्रभावी ढंग से लागू हुई, तो यह मध्यप्रदेश ही नहीं, बल्कि पूरे भारत के लिए एक मिसाल बनेगी।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि मध्यप्रदेश सरकार का यह निर्णय नारी शक्ति के सम्मान और सशक्तीकरण का एक अनुपम प्रतीक है। मुख्यमंत्री मोहन यादव के नेतृत्व में लिया गया यह कदम न केवल प्रगतिशील है, बल्कि यह एक ऐसी मशाल है, जो भारत के हर कोने में नारी सशक्तीकरण की रोशनी फैलाने की क्षमता रखती है। यह नीति महिलाओं को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी, बशर्ते इसे सावधानी, जवाबदेही, और पारदर्शिता के साथ लागू किया जाए। भारत के हर राज्य को इस प्रेरणा को अपनाना चाहिए, ताकि हमारी नारी शक्ति न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हो, बल्कि समाज में अपनी पूरी क्षमता के साथ एक नया इतिहास रचे। यह कदम मध्यप्रदेश से शुरू होकर पूरे देश में एक क्रांति का सूत्रपात करेगा, जो नारी शक्ति को नई दिशा और दृष्टि प्रदान करेगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

नए रिश्ते, नए शब्द

डॉ. नीरज भारद्वाज

भारत विश्व का सबसे सुंदर और व्यवस्थित समाज व्यवस्था का देश है। युगों-युगों से भारतीय समाज में रिश्ते नातों को लेकर जिया गया है। हम अपनी पौराणिक और शास्त्री कथाओं को भी उठाकर देखें तो हमें अपने समाज, परिवार के प्रति प्रेम, स्नेह, त्याग, तपस्या, आज्ञा, परोपकार आदि कितने ही गुण मिल जाएंगे। संयुक्त परिवार की जीवन व्यवस्था ही हमारे सामाजिक जीवन का आधार रही है। दादा-दादी, ताऊ-ताई, चाचा-चाची, बुआ, सास-ससुर, साला, साली आदि इन सभी रिश्तों के साथ हम सभी बंधे रहे हैं। इनकी संतानों के प्रति भी हमारे मधुर बंधन रहे हैं।

भाई का भाई के प्रति त्याग, आज्ञाकारी होना आदि गुण पाया जाता है। पति-पत्नी के मधुर संबंध, माता-पिता की आज्ञा का पालन करना आदि। हर समय और कालखंड में कुछ अपवाद भी रहे लेकिन उन अपवादों की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया है। आगे आने वाली पीढ़ियों ने उन्हें ना तो अपना आदर्श माना है और ना ही उन्हें सराहा है।

युग परिवर्तन के साथ ही वर्तमान महानगरीय या शहरी और अब कुछ-कुछ ग्रामीण जीवन शैली में भी पारिवारिक रिश्तों को लेकर अजब सी रस्साकशी दिखाई देती है। पाश्चात्य समाज का कुप्रभाव अब हम सभी की जीवन शैली पर धीरे-धीरे पड़ने लगा है। एक छत के नीचे रहने वाला हर एक प्राणी अपनी स्वतंत्रता को लेकर समाज पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है। चारदिवारी को तोड़ो, सभी कुछ खुल्लम खुल्ला करो। बिना किसी रोक-टोक के किसी की कोई इज्जत मत करो। सभी संबंध केवल दैहिक सुख से जोड़ दिए गए हैं। देह का खुला भोग, संबंधों से दूर, अपने जीवन में किसी का अधिकार नहीं, एक जंगली व्यवस्था सी दिखाई दे रही है।

चारों तरफ भागम-भाग मची हुई है। शादी को तो वर्तमान पीढ़ी एक ऐसा बंधन मानने लगी है कि इसके बाद तो जीवन ही समाप्त हो जाएगा। यह बात सभी पर लागू नहीं होती लेकिन देखा ऐसा ही जा रहा है। घर बसाने की जिम्मेदारी उठाने से कतराती नई युवा पीढ़ी कौन सा संदेश देना चाहती है? यह बड़ा प्रश्न है। विचार करें तो यदि उनके माता-पिता ही नहीं होते तो वह इस धरा धाम पर कैसे आते? यदि माता-पिता उनकी देख-रेख या परवरिश नहीं करते तो क्या वह आज को देख पाते? यह बहुत बड़े प्रश्न हैं जिस पर उन्हें सोचने की जरूरत है ना कि उन्हें भोगने की।

बदलती पीढ़ियों के दौर के साथ रिश्तों अर्थात संबंधों के नाम भी तेजी से बदल रहे हैं। कभी बचपन में हमें माई बेस्ट फ्रेंड पढ़ाया गया और हमें बताया गया कि बेस्ट फ्रेंड क्या होता है। समय बदला तो बॉयफ्रेंड और गर्लफ्रेंड शब्द चल निकले जो कि समय की मांग कहे जाने लगे। समय परिवर्तनशील है फिर रिलेशनशिप शब्द चल पड़ा। युवा पीढ़ी इन सभी शब्दों और संबंधों के बारे में हमसे अधिक जानते-समझते हैं। समय के साथ सिचुएशनशिप शब्द चल पड़ा, अब यह समझ नहीं आ रहा कि इस शिप कल्चर में हो क्या रहा है? समय बदला तो नैनोशिप शब्द चल निकला। इसके अलावा भी युवाओं में बहुत सारे शिप और संबंध भीतर ही भीतर चल रहे हैं।

विचार करें तो युवाओं में यह सभी शब्द और परिस्थितियाँ तेजी से बढ़ रही हैं। हॉस्टल कल्चर या पीजी ने बच्चों को माता-पिता की छत से दूर रखा, बालक कुछ बनकर बाहर निकालेगा लेकिन परिस्थितियाँ इससे कुछ अलग ही रूप ले रही है। इस व्यवस्था में सिनेमा और अन्य सिनेमाई प्लेटफार्म बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रहे हैं। इन पर भी हमें लगाम लगाने की जरूरत है। एक बात फिर दोहरा रहा हूं कि यह सारी बातें सभी पर लागू नहीं होती हैं लेकिन समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग इसकी चपेट में अवश्य आ गया है। बुराई का यह मकड़जाल सामान्य से सामान्य को भी जकड़ रहा है। हमें इस ओर भी ध्यान देने की जरूरत है।

"सावन की पहली बूँद"

बादल की पहली दस्तक, मन के आँगन आई,
भीग गया हर कोना, हर साँस मुस्काई।
पीपल की टहनी बोली, झूले की है बारी,
छत की बूँदों ने फिर, गाई प्रेम पिचकारी।

मिट्टी ने भी मुँह खोला, सौंधी-सौंधी भाषा,
मन में उठे भावों की, भीनी-भीनी आशा।
चुनरी उड़ती दिशा-दिशा, लहराए सावन,
पलकों पर ठहरी जैसे, बरखा में जीवन।

बिरहा के गीतों में, घुलता राग अधूरा,
झोपड़ी की दीवारें भी, रोतीं तनहा-सा सूरत।
बच्चों की हँसी बिखरे, कीचड़ के संग संग,
भीग रहा हर रिश्ता, जैसे कोई उमंग।

सावन की पहली बूँदें, दिल तक उतरें आज,
हर किसी की आँखों में, बसी कोई आवाज़।
वो जो गया है दूर कहीं, उसे लिखूं संदेस,
"बरखा आई फिर वही, लेकर तेरा भेस।"

डॉ सत्यवान सौरभ

सावन मनभावन: भीगते मौसम में साहित्य और संवेदना की हरियाली

सावन केवल एक ऋतु नहीं, बल्कि भारतीय जीवन, साहित्य और संस्कृति में एक गहरी आत्मिक अनुभूति है। यह मौसम न केवल धरती को हरा करता है, बल्कि मन को भी तर करता है। लोकगीतों, झूले, तीज और कविता के माध्यम से सावन स्त्रियों की अभिव्यक्ति, प्रेम की प्रतीक्षा और विरह की पीड़ा का स्वर बन जाता है।

साहित्यकारों ने इसे कभी श्रृंगार में, कभी विरह में, तो कभी प्रकृति के प्रतीक रूप में देखा है। लेकिन आज का आधुनिक मन सावन को केवल मौसम समझता है, महसूस नहीं करता। यह लेख सावन के सांस्कृतिक, साहित्यिक और भावनात्मक पक्षों को उजागर करते हुए हमें स्मरण कराता है कि भीगना केवल शरीर से नहीं, आत्मा से भी ज़रूरी है।
सावन हमें सिखाता है — प्रकृति से जुड़ो, भीतर झाँको, और संवेदना को जीयो।

डॉ सत्यवान सौरभ

सावन आ गया है। वर्षा ऋतु की पहली दस्तक के साथ ही जब बादल घिरते हैं और बूँदें धरती को चूमती हैं, तो केवल पेड़-पौधे ही नहीं, मनुष्य का अंतर्मन भी हरा होने लगता है। यह महीना केवल वर्षा का नहीं, स्मृति, संवेदना और सृजन का है। सावन जब आता है, तो कविता झरने लगती है, लोकगीत गूंजने लगते हैं, पायलें छनकने लगती हैं और रूठा प्रेम भी नमी में घुलकर लौट आता है।

सावन – एक ऋतु नहीं, एक मनःस्थिति है

भारतीय मानस में ऋतुएँ केवल मौसम नहीं, जीवन के प्रतीक रही हैं। वसंत प्रेम का, ग्रीष्म तपस्या का और सावन प्रतीक्षा का महीना बनकर आता है। सावन में अक्सर प्रेयसी अकेली होती है, प्रियतम किसी दूर देश गया होता है, और प्रतीक्षा के बीच में विरह का काव्य जन्म लेता है। इसलिए साहित्य में सावन का आगमन केवल प्राकृतिक नहीं, आत्मिक घटना है। नइहर से भैया बुलावा भेजवा दे, रकजरारे नयनवा काहे भर आईलर, जैसे कजरी गीत सिर्फ आवाज नहीं, पीड़ा का पानी बनकर झरते हैं।

लोक संस्कृति में सावन का रंग

सावन का महीना भारतीय लोक परंपरा का सबसे रंगीन अध्याय है। कहीं तीज मनाई जा रही होती है, कहीं झूले पड़ रहे होते हैं, कहीं मेंहदी लग रही होती है तो कहीं बहनों के लिए राखी के गीत तैयार हो रहे होते हैं। यह महीना नारी मन की सृजनात्मक उड़ान का समय होता है। दादी-नानी की कहानियाँ, माँ के गीत, और बेटियों की प्रतीक्षा – सब कुछ सावन की हवा में घुल जाता है।
हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और राजस्थान जैसे राज्यों में कजरी, झूला गीत, सावनी और हरियाली तीज

लोककाव्य का रूप ले लेती हैं। ये गीत सिर्फ मनोरंजन नहीं, महिला सशक्तिकरण के सांस्कृतिक दस्तावेज हैं — जहाँ स्त्रियाँ अपनी भावनाएँ, शिकायतें, प्रेम और विद्रोह तक गा डालती हैं।

साहित्य में सावन: बरसते बिम्ब और प्रतीक

साहित्यकारों ने सावन को केवल प्रकृति-चित्रण के लिए ही नहीं, बल्कि मानवीय भावनाओं के प्रतिनिधि के रूप में देखा है। महादेवी वर्मा के शब्दों में सावन
अकेलेपन की पीड़ा है:
नीर भरी दुख की बदली।
मैथिलीशरण गुप्त ने सावन को श्रृंगार रस में देखा –
चपला की चंचल किरणों से, छिटकी वर्षा की बूँदें
गुलज़ार की कविता हो या नागार्जुन की भाषा, सावन हर किसी के लिए कुछ कहता है। किसी के लिए वो टूटे रिश्तों की याद है, किसी के लिए माँ की गोद में बिताया बचपन, और किसी के लिए प्रेम की भीगी पहली रात।

भीतर की बारिश को समझना जरूरी है

आज जब हम एसी कमरों में बैठे,
मोबाइल पर मौसम का अपडेट पढ़ते हैं,
तब सावन की असली ख़ुशबू कहीं खो जाती है। हमने बारिश को केवल ट्रैफिक की समस्या बना दिया है। सावन अब इंस्टाग्राम स्टोरी बनकर रह गया है।

पर क्या हमने कभी भीतर की बारिश को महसूस किया है?

वह बारिश जो हमें धो देती है — अहंकार से, शुष्कता से, थकान से। सावन हमें फिर से नम करता है — हमें इंसान बनाता है। प्रकृति की गोद में लौटने का आमंत्रण है ये मौसम।

आज के कवियों के लिए सावन क्या है?

आज के कवियों को सावन का सिर्फ चित्रण नहीं करना चाहिए, बल्कि उसके भीतर छिपी विसंगतियों को भी पकड़ना चाहिए। जब ग्रामीण भारत के खेतों में पानी नहीं और शहरों में जलभराव है, तब यह असमानता भी साहित्य का विषय बननी चाहिए।
कविता को झूले और कजरी के अलावा किसानों के अधूरे सपनों, बर्बाद फसलों, और जलवायु परिवर्तन के संकट को भी शब्द देना होगा।

सावन और रंगमंच: नाट्य का मौसम

सावन केवल काव्य का विषय नहीं, रंगमंच और लोकनाट्यों का भी प्रिय समय है। उत्तर भारत के कई हिस्सों में इस मौसम में झूला महोत्सव, सावनी गीत प्रतियोगिताएँ, लोकनाट्य और कविता गोष्ठियाँ आयोजित होती हैं।
यह मौसम कलाकारों के पुनर्जन्म जैसा होता है। उनके रंग, उनके स्वर और उनके मंच, सभी में नमी आ जाती है — जो सीधे दर्शक के हृदय तक पहुँचती है।

आधुनिक मन और सावन की चुनौती

आज का मानव सावन को देख तो रहा है, पर महसूस नहीं कर रहा। उसका मन इतनी सूचनाओं, मशीनों और तथ्यों में उलझ गया है कि वह बारिश को केवल मौसम विभाग के पूर्वानुमान के रूप में लेता है।
पर सावन को समझना है तो, खिड़की खोलनी होगी – मन की भी और कमरे की भी।
बूँदों को केवल त्वचा पर नहीं, आत्मा पर भी गिरने देना होगा।

प्रकृति का मौसमी संदेश

सावन हमें याद दिलाता है कि विकास और विनाश के बीच संतुलन जरूरी है। बारिश से पहले आई भीषण गर्मी, जल संकट, जंगलों में आग — यह सब बताता है कि हमने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ा है।
सावन की बारिश इस बिगाड़ को थोड़ी राहत देती है, पर चेतावनी भी देती है कि अगर हमने अब भी नहीं सुधारा, तो सावन केवल स्मृति बनकर रह जाएगा।

समाप्ति की ओर एक सादगी भरा संदेश

सावन को आने दो।
उसे भीतर आने दो।
जब वह बूँद बनकर गिरे, तो केवल छतों पर नहीं, तुम्हारी कविता में भी गिरे।
जब वह झूला बनकर डोले, तो केवल पेड़ों पर नहीं, तुम्हारी कल्पना में भी डोले।
यह मौसम मन का है, बस उसे पहचानने की ज़रूरत है।
बचपन के वे झूले, माँ के लगाए मेंहदी के रंग, छत पर रखे बर्तन, और खेत में दौड़ता नंगाधड़ंग बच्चा — सब अब भी हमारे भीतर कहीं जिंदा हैं। उन्हें ज़रा सावन में बाहर आने दो।

निवेदन:

जब भी बादल घिरें, मोबाइल मत उठाना, खिड़की खोल लेना।
और मन करे तो एक पुराना गीत गा लेना –
कभी तो मिलने आओ सावन के गीत गाने...

कहानी: चिट्ठियाँ और चुप्पियाँ

डॉ. सत्यवान सौरभ

भिवानी जिले के एक छोटे से गाँव 'निवाड़ा' में एक जीर्ण-शीर्ण सा डाकघर था। मिट्टी की दीवारें, छप्पर की छत और सामने एक पुराना नीम का पेड़, जिसकी छाँव में बैठकर बुजुर्ग चिट्ठियाँ पढ़ते थे। उसी डाकघर में चालीस वर्षों से कार्यरत था गोपाल डाकिया—गाँव की धड़कन जैसा, हर घर का अपना आदमी।

गोपाल सिर्फ चिट्ठियाँ नहीं लाता था, वह बेटों की नौकरी की खबर, बेटियों की ससुराल की बातें और कहीं दूर पढ़ने गए बच्चों की ममता भरी स्याही भी साथ लाता था।

हर किसी के पास उसकी अपनी कहानी थी—गोपाल की वज़ह से।

गाँव में एक लड़की थी सविता। और शहर में एक लड़का था रमेश—इंजीनियरिंग की पढ़ाई करता था। दोनों के बीच प्रेमपत्रों का सिलसिला गोपाल डाकिए की उंगलियों के ज़रिए चलता रहा। हर शुक्रवार सविता, नीम के नीचे बैठी, गोपाल से पूछती—₹कुछ आया है?₹

गोपाल मुस्कुराता और लिफाफा आगे बढ़ा देता। सविता की आँखें चमक जातीं। कभी उसमें कविता होती, कभी सपना, कभी शादी का वादा।

इन्हीं चिट्ठियों में दो दिलों ने भविष्य की कल्पना कर ली थी।

लेकिन सब कुछ हमेशा प्रेम से नहीं चलता। सविता के पिता रामस्वरूप को यह रिश्ता मंजूर नहीं था। जात-पात की दीवार, ज़मीन-जायदाद का घमंड, और समाज की निगाहें—इन सब ने चिट्ठियों की स्याही को जहर बना दिया।

रामस्वरूप ने रमेश पर बलात्कार और धोखा देने का केस दर्ज करवा दिया।

और वहीं से एक और दरवाज़ा खुला—कचहरी का दरवाज़ा।

अब सविता हर शुक्रवार चिट्ठियों का इंतजार नहीं करती थी, बल्कि तारीख़ की अगली पर्ची का।

कचहरी में रमेश का वकील और रामस्वरूप का वकील, दोनों अपने-अपने कागज़ों में ₹सविता की सहमति₹ और ₹रमेश की नीयत₹ के तर्क खोज रहे थे।

प्यार की चिट्ठियाँ अब सबूत बन चुकी थीं। अदालत में उन्हें पेश किया गया। जज साहब ने कहा, "यह पत्र क्या किसी नाबालिग को फुसलाने का प्रमाण नहीं है?"

गोपाल को गवाही के लिए बुलाया गया। उसने कांपते स्वर में कहा, "हुजूर, मैंने तो बस चिट्ठियाँ दी थीं किसी अदालत के लिए नहीं, दो दिलों के लिए।"

मगर कोर्ट को दिलों की भाषा नहीं आती।

सविता अब चुप रहने लगी थी। चिट्ठियों की जगह केस डायरी आ गई थी। माँ-बाप ने घर से बाहर निकलने पर रोक लगा दी। लड़की अब "इज्जत" बन चुकी थी, जिसका मोल अदालत में तय हो रहा था।

हर तारीख पर सविता से वही सवाल पूछे जाते:

₹क्या आपने अपनी इच्छा से चिट्ठियाँ लिखीं?₹

₹क्या आप दोनों ने शारीरिक संबंध बनाए?₹

₹क्या लड़का शादी से मुकर गया?₹

उसकी आत्मा चीत्कार करती—₹हाँ, मैंने प्रेम किया था, जुर्म नहीं!₹

मगर अदालत प्रेम नहीं सुनती—वो सिर्फ बयान दर्ज करती है।

इस बीच गाँव का डाकघर बंद कर दिया गया।

₹अब सबकुछ डिजिटल है, चिट्ठियाँ कौन भेजता है?₹ — ये कहकर पोस्टल विभाग ने गोपाल को रिटायर कर दिया।

गोपाल उस दिन रोया था। नीम के नीचे बैठकर उसने आख़िरी चिट्ठियाँ जलाईं, सिवाय एक के—सविता की चिट्ठी रमेश को, जो उसने कभी भेजी नहीं थी। उसमें लिखा था—

₹अगर ये दुनिया हमें अलग कर दे, तो याद रखना... मेरी आत्मा तुम्हारे नाम की स्याही से रंगी है।₹

तीन साल बाद, कोर्ट ने फैसला सुनाया—₹युवक निर्दोष है। संबंध आपसी सहमति से थे। लड़की बालिग थी। केस झूठा था।₹

मगर तब तक रमेश अमेरिका चला गया था, शादी कर ली थी।

और सविता? वह चुप थी। अदालत से बाहर निकलकर एक संवाददाता ने पूछा—₹आप न्याय से संतुष्ट हैं?₹

उसने सिर झुका लिया। बोली—

₹मैं प्रेम चाहती थी, इंसाफ नहीं।₹

गोपाल अब अकेला रहता है। वह पुरानी चिट्ठियों को संभालकर रखता है—मानो प्रेम का संग्रहालय।

एक दिन किसी पत्रकार ने पूछा—₹काका, अब आप क्या करते हैं?₹

गोपाल बोला—

₹डाकिया था... अब गवाही देने वालों की कतार में हूँ। पहले प्रेम की डाक पहुंचाता था, अब तारीख़ की सूचना देने वालों की भीड़ देखता हूँ। हैरत है... डाकखाने कम हो गए और कचहरियां बढ़ती चली गईं...₹

एक नई पीढ़ी अब ईमेल और व्हाट्सऐप पर बात करती है। उन्हें चिट्ठियों की अहमियत नहीं मालूम।

पर एक दिन, एक लड़की अपने कॉलेज में प्रेम पत्रों पर प्रोजेक्ट बना रही थी। उसने गोपाल से मुलाक़ात की।

गोपाल ने सविता की वह चिट्ठी उसे सौंप दी, और कहा,

अगर तुम कभी फिर चिट्ठियों की दुनिया बसा सको, तो इसे याद रखना—प्रेम को सबूत मत बनने देना।

चिट्ठियाँ रिश्तों की रचनात्मकता थीं, और कचहरियाँ टूटते रिश्तों का दस्तावेज़।

आज डाकखाने वीरान हैं, और अदालतें भीड़ से भरीं। संवाद की जगह विवाद ने ले ली है। यह कहानी सविता और रमेश की नहीं, हम सबकी चेतावनी है—कि यदि हमने रिश्तों में संवाद, भरोसा और सच्चाई नहीं बचाई, तो हर प्रेम एक केस बन जाएगा, और हर भावना एक तारीख़।

एलन मस्क बनाम ट्रंप: आदर्शों की लड़ाई या निजी युद्ध?

अमेरिका की राजनीति में एक नया सूरज उग रहा है, जिसकी चमक ने वाशिंगटन के गलियारों को हिलाकर रख दिया है। एलन मस्क, वह शख्स जिसने अंतरिक्ष को छुआ और धरती को इलेक्ट्रिक सपनों से सजाया, अब एक नए युद्धक्षेत्र में कदम रख चुके हैं। उनकी 'अमेरिकन पार्टी' न केवल एक राजनीतिक दल का ऐलान है, बल्कि यह एक क्रांति का शंखनाद है, जो अमेरिकी जनता की खोई हुई आजादी को वापस लाने का वादा करता है। यह वह आग है जो डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों को चुनौती दे रही है, रिपब्लिकन और डेमोक्रेट के एकछत्र राज को झकझोर रही है, और अमेरिकी लोकतंत्र को एक नया रास्ता दिखाने का दम रखती है। मस्क का यह कदम न तो सनक है, न ही तमाशा—यह एक ऐसी चिंगारी है, जो अमेरिका के सियासी जंगल में आग लगा सकती है।

मस्क का गुस्सा 'वन बिग ब्यूटीफुल बिल' से शुरू हुआ, जिसे ट्रंप ने अपनी नीतियों का ताज बताया। इस 940 पन्नों के महालेख में ट्रंप के पहले कार्यकाल की कर कटौती को स्थायी करने, सैन्य और सीमा सुरक्षा पर खर्च बढ़ाने, और सामाजिक कल्याण योजनाओं में कटौती जैसे प्रावधान हैं। ट्रंप इसे अमेरिका की महानता की वापसी कहते हैं, लेकिन मस्क इसे देश को कर्ज के गड्ढे में धकेलने वाला 'पागलपन' मानते हैं। उनका मानना है कि यह बिल न केवल सरकारी खजाने को खोखला करेगा, बल्कि नवाचार और उभरते उद्योगों—जैसे इलेक्ट्रिक वाहन और नवीकरणीय ऊर्जा—को भी चोट पहुंचाएगा। मस्क की टेस्ला और स्पेसएक्स जैसी कंपनियां इस बिल के प्रभाव से अछूती नहीं रहेंगी, और यही वह आर्थिक और वैचारिक जंग है, जिसने मस्क को सियासत के मैदान में उतार दिया।

मस्क का दावा है कि अमेरिका में सच्चा लोकतंत्र खतरे में है। डेमोक्रेट और रिपब्लिकन पार्टियों का एकछत्र राज अब एक 'पॉर्की पिग सिस्टम' बन चुका है, जहां बर्बादी, भ्रष्टाचार और अनावश्यक खर्च की नीतियां जनता की आवाज को दबा रही हैं। उनकी 'अमेरिकन पार्टी' इस बंद गली से निकलने का रास्ता है। यह पार्टी केवल चुनावी गणित का हिस्सा बनने नहीं आई, बल्कि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, जिम्मेदार राजकोषीय नीतियों और कम सरकारी हस्तक्षेप का झंडा बुलंद करना चाहती है। मस्क ने साफ कहा है कि वे उन नेताओं का विरोध करेंगे, जो देश को कर्ज के बोझ तले दबाने की नीतियों का समर्थन करते हैं। उन्होंने प्रतिनिधि थॉमस मैसी जैसे नेताओं का समर्थन किया, जिन्होंने इस बिल का डटकर विरोध किया, और उन सांसदों को प्राइमरी चुनाव में हराने की बात कही, जिन्होंने इसे पास करवाया।

मस्क और ट्रंप का रिश्ता कभी दोस्ती का प्रतीक था। 2024 के राष्ट्रपति चुनाव में मस्क ने ट्रंप के लिए करीब 288 मिलियन डॉलर का चंदा दिया और उन्हें 'अमेरिका का सच्चा नेता' बताया। ट्रंप ने भी मस्क को 'डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएंसी' का नेतृत्व सौंपकर उनका सम्मान किया। लेकिन यह बिल दोनों के बीच की खाई को चौड़ा कर गया। मस्क ने ट्रंप की नीतियों को 'देश के लिए आत्मघाती' करार दिया, जबकि ट्रंप ने मस्क की कंपनियों को मिलने वाली सरकारी सब्सिडी खत्म करने और उन्हें दक्षिण अफ्रीका वापस भेजने की धमकी दी। यह तनातनी अब वैचारिक मतभेदों से आगे बढ़कर निजी हमलों तक पहुंच चुकी है, जिसमें मस्क ने ट्रंप पर एपस्टीन फाइल्स जैसे संवेदनशील मुद्दों को उठाकर पलटवार किया है।

'अमेरिकन पार्टी' का ऐलान भले ही जोश और जुनून से भरा हो, लेकिन इसका रास्ता कांटों से भरा है। अमेरिकी इतिहास में तीसरी पार्टी कभी सत्ता के शिखर तक नहीं पहुंची। रॉस पेरोट ने 1992 में 19% वोट हासिल किए, लेकिन इलेक्टोरल कॉलेज में उनकी पार्टी को एक भी वोट नहीं मिला। मस्क का दक्षिण अफ्रीकी मूल उन्हें राष्ट्रपति पद के लिए अयोग्य बनाता है, और उनकी पार्टी की नीतियां, संगठन और नेतृत्व अभी तक धुंध में हैं। विदेश नीति, सामाजिक न्याय और स्वास्थ्य जैसे जटिल मुद्दों पर मस्क की स्थिति स्पष्ट नहीं है। फिर भी, उनकी आर्थिक ताकत, तकनीकी नवाचार और युवाओं के बीच लोकप्रियता उन्हें एक अनोखा खिलाड़ी बनाती है। उनके मंच एक्स पर लाखों समर्थक उनकी हर बात को गंभीरता से लेते हैं, और उनकी वित्तीय शक्ति 2026 के मध्यावधि चुनावों में रिपब्लिकन पार्टी के लिए मुश्किलें खड़ी कर सकती है।

मस्क की पार्टी का प्रभाव कितना गहरा होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे कितनी जल्दी एक स्पष्ट रणनीति और संगठन तैयार कर पाते हैं। अगर यह केवल ट्रंप के खिलाफ उनकी नाराजगी का परिणाम साबित हुई, तो यह एक अल्पकालिक हलचल बनकर रह सकती है। लेकिन अगर मस्क अपनी दृष्टि को एक ठोस वैचारिक ढांचे में ढाल पाए, तो 'अमेरिकन पार्टी' अमेरिकी सियासत में तीसरे विकल्प की कमी को पूरा कर सकती है। खासकर वे युवा मतदाता, जो मौजूदा व्यवस्था से असंतुष्ट हैं, मस्क में एक नया नेतृत्व देख सकते हैं। दूसरी ओर, यह भी संभव है कि उनकी पार्टी ट्रंप के वोट बैंक को बांटकर डेमोक्रेट्स को अप्रत्यक्ष रूप से फायदा पहुंचाए।

मस्क का यह कदम केवल एक पार्टी का गठन नहीं है; यह एक विचार है, जो अमेरिकी जनता को यह सोचने पर मजबूर कर रहा है कि क्या वाकई उनका लोकतंत्र सच्चा है। उनकी 'अमेरिकन पार्टी' उस सपने का प्रतीक है, जिसमें सरकार जनता की सेवा करती है, न कि जनता सरकार की गुलाम बनती है। यह वह ललकार है, जो वाशिंगटन के सत्ता प्रतिष्ठानों को चुनौती दे रही है। क्या मस्क इस आग को बुझने देंगे, या इसे एक ऐसी ज्वाला में बदल देंगे, जो अमेरिका की सियासत को हमेशा के लिए बदल दे? यह सवाल आज हर अमेरिकी के दिल में गूंज रहा है। मस्क ने शायद एक नई क्रांति की नींव रख दी है, जिसका असर आने वाले दशकों तक देखा जाएगा। यह वह क्षण है, जब एक व्यक्ति ने इतिहास को पलटने का साहस दिखाया है, और दुनिया सांस थामे देख रही है कि यह साहस कितनी दूर तक जाएगा।

राहुल गांधी के दौरे को लेकर सोशल मीडिया विभाग की तैयारी बैठक

परिवहन विशेष न्यूज

भुवनेश्वर:-11 तारीख को होने वाली ₹संविधान बचाओ₹ महारैली में जननायक राहुल गांधी, राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खालमुडे, राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) केसी वेणुगोपाल के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के नवनियुक्त सोशल मीडिया विभाग के अध्यक्ष माननीय गुनुपुर विधायक सत्यजीत गमांग की अध्यक्षता में तैयारी बैठक हुई।

तैयारी बैठक के बाद प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में श्रीयुक गमांग ने बताया कि राहुल गांधी के ओडिशा आने की खबर से कांग्रेस महल में उत्साह का माहौल है। प्रदेश कांग्रेस का सोशल मीडिया और अधिक सक्रिय होगा और ओडिशा की जनता के करीब होगा, जबकि केंद्र और राज्य भाजपा सरकार की 11 साल की विफलता और धोखे को ओडिशा की जनता के सामने पेश किया जाएगा। श्रीयुत गमंगो ने घोषणा की कि प्रदेश कांग्रेस कमेटी प्रदेश अध्यक्ष भक्त चरण दास और प्रदेश कांग्रेस सोशल मीडिया विभाग के हाथ मजबूत करके पार्टी को मजबूत करने का काम करेगी।

उक्त प्रेस वार्ता में छात्र नेता विभूति भूषण महापात्र, उपाध्यक्ष संतोष कुमार प्रधान ने पत्रकारों को आगामी दिनों में प्रदेश कांग्रेस कमेटी किस तरह सोशल मीडिया विभाग को मजबूत करेगी और राहुल गांधी की आगामी रैली के कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी।

आज की तैयारी बैठक में अन्य लोगों के अलावा पूर्व महासचिव महीपर निखत, पूर्व महासचिव सुभाष चंद्र नायक, ऋषि कपूर साहू, रतिकांत दास, सुधीर रावल, शाश्वत केशर बलियारासिंह, विभूति भूषण दलसिंघार, सरोज बेहरा, संतोष कुमार पंडा, कुनू मिश्रा, इमरान अली खान, सत्य रंजन बिष्टी समेत 30 से अधिक कार्यकर्ता मौजूद थे।

भक्तों के फौजदारी मामले की सुनवाई करते हैं बाबा बासुकीनाथ

कुमार कृष्णन

श्रावण माह भगवान शिव को समर्पित है। भगवान शिव तो 'संहारक' है, सृजन कर्ता और 'नव निर्माण कर्ता' भी है। 'शिव' अर्थात कल्याणकारी, सर्वसिद्धिदायक, सर्वश्रेयस्कर 'कल्याणस्वरूप' और 'कल्याणप्रदाता' है। जो हमेशा योगमुद्रा में विराजमान रहते है और हमें जीवन में योगस्थ, जीवंत और जागृत रहने की शिक्षा देते है। पुराणों में उल्लेख है कि समुद्र मंथन के दौरान निकले विष के विनाशकारी प्रभावों से इस धरा को सुरक्षित रखने के लिये भगवान शिव में उस हलाहल विष को अपने कंठ में धारण किया और पूरी पृथ्वी को विषाक्त होने से; प्रदूषित होने से बचा लिया। भगवान शिव ने विष शमन करने के लिये अपने सिर पर अर्धचंद्राकार चंद्रमा को धारण किया तथा सभी देवताओं ने माँ गंगा का पवित्र जल उनके मस्तक पर डाला ताकि उनका शरीर शीतल रहे तथा विष की उष्णता कम हो जाये।

चूंकि ये घटना श्रावण मास के दौरान हुई थीं, इसलिए श्रावण में शिवजी को माँ गंगा का पवित्र जल अर्पित कर शिवाभिषेक किया जाता है, कांवड यात्रा इसी का प्रतीक है। शिवाभिषेक से तात्पर्य दिव्यता को आत्मसात कर आत्मा को प्रकाशित करना है। प्रतीकात्मक रूप से शिवलिंग पर पवित्र जल अर्पित करने का उद्देश्य है कि हमारे अन्दर की और वातावरण की नकारात्मकता दूर हो तथा सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड में सकारात्मकता का समावेश हो।

तीर्थ नगरी देवघर स्थित द्वादश ज्योर्तिलिंग बाबा बैधनाथ और सुलतानगंज की उत्तर वाहिनी गंगा तट पर स्थित बाबा अजगैबीनाथ के साथ दुमका जिला में सुरभ्य वातावरण में स्थित बाबा बासुकीनाथ धाम की गणना बिहार और झारखंड ही नहीं, वरन राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख शैव-स्थल के रूप में होती है। देवघर-दुमका मुख्य मार्ग पर स्थित इस पावन धाम में श्रावणी-मेला के दौरान केसरिया वस्त्रधारी कांवरिया तीर्थयात्रियों की खास चहल-पहल रहती हैं। ऐसी मान्यता है कि बासुकीनाथ की पूजा के बिना बाबा बैद्यनाथ की पूजा अधूरी है। यही कारण है कि भक्तगण बाबा बैद्यनाथ की पूजा के साथ साथ यहां आकर नागेश ज्योतिर्लिंग के नाम से विख्यात बाबा बासुकीनाथ की आराधना करते हैं। सावन के महीने में तो हजारों लाखों भक्तगण सुलतानगंज-अजगैबीनाथ से उत्तरवाहिनी गंगा का पवित्र जल अपने कांवरों में भरते हैं। फिर एक सौ किलोमीटर से भी अधिक पहाड़ी जंगली रास्ते पैदल पारकर इसे देवघर में बैधनाथ ज्योतिर्लिंग पर चढ़ाते हैं। इसके बाद वे बासुकीनाथ आकर नागेश ज्योतिर्लिंग पर जल-अर्पण करते हैं। भगवान शिव औघड़दानी कहलाते हैं। भक्तों की भक्ति से प्रसन्न होकर तुरंत वरदान देनेवाले। तभी तो शिवभक्तों की नजरों में यहां भगवान शंकर की अदालत लगती है। शिव-भक्त मानते हैं कि जहां (बैद्यनाथ धाम) भगवान शंकर की दीवानी अदालत है, वही बासुकीनाथ धाम उनकी फौजदारी अदालत है। बाबा बासुकीनाथ के दरबार में मांगी गयी मुरादों की तुरंत सुनवाई होती है। यही कारण है कि साल के बारहों महीने यहां देश के कोने-कोने से भक्तों का आवागमन जारी रहता है।

प्राचीन काल में बासुकीनाथ घने जंगलों से घिरा था। उन दिनों यह क्षेत्र दारूक-वन कहलाता था। पौराणिक कथा के अनुसार इसी दारुक-बन में द्वादश ज्योतिर्लिंग स्वरूप नागेश्वर ज्योतिर्लिंग का निवास था। शिव पुराण में वर्णित है कि दारूक-बन दारूक नाम के असुर के अधीन था। कहते हैं, इसी दारूक-बन के नाम पर संताल परगना प्रमंडल के मुख्यालय दुमका का नाम पड़ा है। बासुकीनाथ शिवलिंग के आविर्भाव की कथा अत्यंत निराली है। एक बार की बात है- बासु नाम का एक व्यक्ति कंद की खोज में भूमि खोद रहा था। उसके शस्त्र से शिवलिंग पर चोट पड़ी। बस क्या था- उससे रक्त की धार बह चली। बासु यह दृश्य देखकर भयभीत हो गया। उसी क्षण भगवान शंकर ने उसे आकाशवाणी के द्वारा धीरज दिया - डरो मत, यहां मेरा निवास है। भगवान भोलेनाथ की वाणी सुन बासु श्रद्धा-भक्ति से अभिभूत हो गया और उसी समय से उस लिंग की मूर्ति-पूजन करने लगा। बासु द्वारा पूजित होने के कारण उनका नाम बासुकीनाथ पड़ गया। उसी समय से यहां शिव-पूजन की जो परम्परा शुरु हुई, वो आज तक विद्यमान है। आज यहां भगवान भोले शंकर और माता पार्वती का विशाल मंदिर है। मुख्य मंदिर के बगल में शिव गंगा है जहां भक्तगण स्नान कर अपने आराध्य को बेल-पत्र, पुष्प और गंगाजल समर्पित करते हैं तथा अपने कष्ट क्लेशों को दूर करने की प्रार्थना करते हैं।

यह माना जाता है कि वर्तमान दृश्य मंदिर की स्थापना 16वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में हुई। हिंदुओं के कई ग्रंथों में सागर मंथन का वर्णन किया गया है, जब देवताओं और असुरों ने मिलकर सागर मंथन किया था। बासुकीनाथ मंदिर का इतिहास भी सागर मंथन से जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि सागर मंथन के दौरान पर्वत को मथने के लिए वासुकी नाग को माध्यम बनाया गया था। इन्हीं वासुकी नाग ने इस स्थान पर भगवान शिव की पूजा अर्चना की।

उफ्तत्सा - राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा 'बिहार इकाई' का शकुंतला भवन मुंगेर में राज्य स्तरीय बैठक आयोजन हुआ संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

उफ्तत्सा - राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा "बिहार इकाई" के द्वारा आज शकुंतला भवन मुंगेर में राज्य स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न समस्याओं की चर्चा के पश्चात संगठन को और सुदृढ़ को ढांचा प्रदान करने हेतु विचार विमर्श किया गया। बिहार प्रभारी प्रभात कुमार शाह ने कहा कि पूरे राष्ट्र में हिट एंड रन मामले में जो विरोध प्रदर्शन हुआ उसमें प्रमुखता से राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा न सिर्फ उभर कर सामने आया बल्कि उसने सारथी समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया, आज जमीनी स्तर पर यदि किसी के कार्यकर्ता सड़क पर ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी समाज की भलाई के लिए सतत प्रयास कर रहे हैं तो वह सिर्फ राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा के ही कार्यकर्ता हैं। वही दीपक सिँह ने पूरे बिहार ही नहीं बल्कि झारखंड और उत्तर प्रदेश में परिवहन उद्योग के अन्तर्गत परिवहन व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाएं रखने का आह्वान किया। पारस्परिक सामनजस्य व पारदर्शिता पूर्ण संगठन के माध्यम से किसी भी समस्या का समाधान सरलता से किया जा सकता है जिसका उदाहरण राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ने बीते समय में दिखाया है व यह तो सिर्फ ट्रेलर था फिल्म अभी बाकी है। निशांत कुमार सिंह ने संगठन को और सुदृढ़ करने की उम्मीद जताते हुए कहा कि जिस तरह से आप लोग संस्था से समय असमय समस्या आने पर सहयोग लेते हैं इसी तरह तन्मयता से संस्था के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी निभाएं तब इसका दोहरा आनंद आएगा। मुंगेर जिला के अभिनव बाबुल जी ने कहा कि हमारा जिला जिस तरह से सर्वदा ऐतिहासिक उदाहरण का केंद्रबिंदु रहा है राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा में भी बिहार टीम या राष्ट्रीय कार्यकारिणी जब भी आवाज देगी हम संगठन के केंद्रीय बिंदु में साम दाम दण्ड भेद सह सर्हष प्रस्तुत रहेंगे व जो भी जिम्मेदारी मुंगेर जिला को दी जाएगी मुंगेर जिला उसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेगा, राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा बिहार इकाई के लिए मुंगेर एक मॉडल जिला बनकर उभरेगा यह हमारा आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है। प्रदेश अध्यक्ष शिवराज यादव ने कहा कि कोई भी सरकार हमें कमतर आंकनें का कतई प्रयास न करें कम से कम बिहार चुनाव में इसकी बानगी देखने को मिलेगी ट्रक ट्रांसपोर्टर्स सारथी समाज एकजुट होकर मतदान करेगा जल्द ही पटना कार्यक्रम में इसकी पूर्ण रुपरेखा तय होगी। राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने संपूर्ण भारत में ऐतिहासिक केंद्र बिंदु में से एक मुंगेर जिला के अवदानों के प्रति नमन करते हुए हार्दिक आभार व्यक्त किया व आशा व्यक्त की। इस संग्रामी धरती ने जो रूपरेखा आज तैयार की है उसके द्वारा सिर्फ मुंगेर ही नहीं बिहार ही नहीं अपितु संपूर्ण राष्ट्र में ट्रक ट्रांसपोर्टर व सारथी समाज एक नया आयाम प्रस्तुत करेगा व निस्वार्थ एंव समर्पित कार्यकर्ताओं की एक बड़ी फौज के साथ परिवहन उद्योग के अंतिम पंक्ति में बैठे लोगों के सुख-दुख में सदा ही तत्परता सह प्रस्तुत रहेगा। जितने कम समय में राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ने देश के परिवहन उद्योग के सामने संगठन की एक मिसाल पेश की है वह अपने आप में एक उदाहरण है। रविंद्र बधानी ने मोबाईल के जरिये अपना संदेश रखा व मुंगेर टीम को धन्यवाद दिया। प्रभात शाह को राष्ट्रीय कार्यसमिति हेतु नामित करने को समर्थन मिला।

बिहार में मतदाता सूची की जांच या एनआरसी!

लेखक: शम्स आग़ाज़

भारत के चुनाव आयोग ने हाल ही में बिहार में मतदाता सूची की विशेष गहन पुनरीक्षण (Special Intensive Revision - SIR) की घोषणा की है। इसका उद्देश्य तो सतह पर मतदाता सूची की शुद्धता, पारदर्शिता और अद्यतनता बताया गया है, लेकिन इस प्रक्रिया की प्रकृति, मांगे जा रहे दस्तावेज़ों और इसके संभावित प्रभावों ने ऐसे संदेहों को जन्म दिया है जो राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) जैसे कठोर और विवादास्पद प्रक्रिया से मिलते-जुलते हैं। इन आशंकाओं से खास तौर पर देश के कमजोर वर्ग, प्रवासी मजदूर, ग्रामीण महिलाएं, अशिक्षित नागरिक और अल्पसंख्यक प्रभावित हो सकते हैं, जिनकी नागरिकता और मतदान का अधिकार दांव पर लग सकता है।

यह केवल मतदाता सूची के अद्यतन या सुधार का मामला नहीं है। जिन नागरिकों के पास पहचान, पता, उम्र या माता-पिता की नागरिकता को साबित करने के लिए आवश्यक दस्तावेज़ नहीं होंगे, उनके नाम मतदाता सूची से हटाए जा सकते हैं। इससे न केवल वे लोग अपने संवैधानिक मतदान अधिकार से वंचित हो जाएंगे, बल्कि कुछ मामलों में उन्हें ₹संदिग्ध नागरिक₹ की श्रेणी में भी रखा जा सकता है।

असम में एनआरसी की मिसाल

2019 में असम में लागू एनआरसी प्रक्रिया में लाखों लोगों को अपनी नागरिकता साबित करने के लिए पुराने दस्तावेज़ दिखाने पड़े। बहुत से लोग, विशेषकर गरीब और ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले नागरिक, ये दस्तावेज़ नहीं जुटा सके और उन्हें नागरिकता से बाहर कर दिया गया। इनमें से कुछ को हिरासत केंद्रों में रखा गया और कई लोग, जो दशकों से भारत में रह रहे थे, उन्हें ₹विदेशी₹ करार दे दिया गया।

बिहार में वर्तमान SIR प्रक्रिया भी कमोबेश उसी दिशा में बढ़ रही है। लोगों से विशेष फार्म भरवाए जा रहे हैं, जिनमें पहचान, निवास, उम्र और माता-पिता की पूरी जानकारी मांगी जा रही है। 1987 के बाद जन्मे लोगों के लिए माता-पिता की नागरिकता साबित करना भी अनिवार्य कर दिया गया है। यही वह पहलू है जो इस प्रक्रिया को एनआरसी से जोड़ देता है।

अब सवाल यह उठता है कि जिन लोगों के माता-पिता के पास पहचान पत्र या नागरिकता से संबंधित दस्तावेज़ नहीं हैं, या जिनके पास जन्म प्रमाण पत्र नहीं है, वे अपनी नागरिकता कैसे साबित करेंगे? काम की तलाश में अन्य राज्यों में गए प्रवासी मजदूरों का पता आधार कार्ड या अन्य दस्तावेजों में अलग हो सकता है, जिसके चलते उनका नाम स्थानीय मतदाता सूची से हट सकता है।

महिलाएं: जिन्होंने विवाह के बाद उपनाम या पता बदला है, उन्हें पहचान के अंतर के कारण अलग किस्म की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

अशिक्षित और ग्रामीण नागरिक: जो न तो ऑनलाइन सिस्टम को समझते हैं और न ही फार्म भर सकते हैं, वे भी इस प्रक्रिया से बाहर रह सकते हैं।

मतदान करना केवल एक राजनीतिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक संवैधानिक अधिकार और लोकतंत्र की नींव है। यदि कोई नागरिक केवल इस कारण से मतदान से वंचित रह जाए कि वह कोई विशेष दस्तावेज़ प्रस्तुत नहीं कर सका, तो यह संविधान की आत्मा और न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन है। यह मान लेना कि मतदाता सूची की सुधार प्रक्रिया केवल ₹गलतियों की शुद्धि₹ तक सीमित है, वास्तविकता से मेल नहीं खाता। जब दस्तावेज़ों के आधार पर लोगों को नागरिकता के दायरे से बाहर कर दिया जाए, तो यह केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक और मानवाधिकार का मुद्दा बन जाता है।

कमजोर वर्गों की विशेष परेशानियां

प्रवासी मजदूर: दूसरे शहरों में काम करने के कारण उनका स्थायी पता अलग हो सकता है, जिससे उनके नाम हटने का खतरा है।

महिलाएं: विवाह के बाद नाम या पता बदलने के कारण पहचान में अंतर आ सकता है।

ग्रामीण और अशिक्षित नागरिक: फार्म भरने या ऑनलाइन प्रक्रिया समझने में अक्षम।

अल्पसंख्यक और पिछड़े वर्ग: जिनका पहले से ही सरकारी मशीनरी पर भरोसा कम है, अब और अधिक भय और अनिश्चितता में हैं।

सुझाव और माँगें:

दस्तावेज़ों में लचीलापन: जिनके पास माता-पिता की नागरिकता साबित करने वाले दस्तावेज़ नहीं हैं, उनके लिए हलफनामा, पंचायत प्रमाणपत्र या स्थानीय गवाही को स्वीकार किया जाए – जैसा कि असम में कुछ मामलों में किया गया था।

बीएलओ (बूथ स्तर अधिकारी) का प्रशिक्षण: उन्हें प्रभावी, संवेदनशील और समावेशी तरीके से प्रशिक्षित किया जाए ताकि वे विशेष रूप से महिलाओं, बुजुर्गों और हाशिए पर मौजूद लोगों से सहयोगी और सम्मानजनक व्यवहार करें।

सामाजिक संगठनों की भागीदारी: एनजीओ, मदरसे, मस्जिदें, पंचायतें और स्थानीय स्वयंसेवी संस्थाएं आगे आएं और लोगों को फार्म भरने, दस्तावेज़ जुटाने और प्रक्रिया को समझाने में मदद करें।

स्थानीय भाषाओं में सुविधा: सभी फॉर्म और ऑनलाइन सिस्टम को हिंदी, उर्दू और अन्य स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराया जाए।

सरकारी जागरूकता अभियान: सरकार और चुनाव आयोग द्वारा बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान चलाया जाए ताकि लोग प्रक्रिया को समझ सकें और अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें।

फैसला वापस लिया जाए: वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए SIR प्रक्रिया को वापस लेना एक व्यावहारिक और संवेदनशील कदम होगा, जिससे संसाधनों और संस्थागत क्षमताओं को बेहतर ढंग से सुरक्षित रखा जा सकेगा।

यह केवल मतदाता सूची सुधार का प्रश्न नहीं है, बल्कि लाखों नागरिकों के भविष्य, उनके लोकतांत्रिक अधिकारों और संवैधानिक पहचान का मामला है। इस प्रक्रिया को केवल तकनीकी नहीं बल्कि एक संवेदनशील मानवीय मुद्दा समझा जाना चाहिए। यदि कोई नागरिक केवल एक कागज की कमी के कारण वोट देने से वंचित रह जाए, तो यह न केवल उसका नुकसान है, बल्कि हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की सामूहिक विफलता है।

हमारा सामूहिक कर्तव्य है कि हम अपने आस-पास के लोगों की मदद करें, उनका मार्गदर्शन करें, उनका हौसला बढ़ाएं और उनके मताधिकार की रक्षा करें। क्योंकि जब अंतिम व्यक्ति की आवाज़ सुनी जाएगी, तभी लोकतंत्र वास्तव में पूरा होगा।

मनमोहन सिंह फिर बने प्रदेश भाजपा अध्यक्ष

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ साम्बादिक

भूबनेश्वर: मनमोहन सामल फिर से भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बन गए हैं। मनमोहन ने अकेले उम्मीदवार के तौर पर नामांकन दाखिल किया था। हालांकि, उनके खिलाफ किसी और उम्मीदवार ने नामांकन दाखिल नहीं किया, इसलिए यह पहले से ही साफ था कि मनमोहन सामल ही भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बनेंगे। इसलिए केंद्रीय नेतृत्व ने मनमोहन के नाम पर मुहर लगा दी है। मनमोहन के नेतृत्व में भाजपा राज्य में सरकार बनाने में सफल रही। मंगलवार को औपचारिक रूप से इसकी घोषणा की जाएगी। उनका कार्यकाल अगले तीन साल का होगा। अब भाजपा राज्य में अकेले सत्ता में आ गई है। ऐसे में सरकार और संगठन के बीच समन्वय नितांत आवश्यक है। पिछले छह महीने से प्रदेश भाजपा अध्यक्ष का चुनाव अधर में लटका हुआ था। आखिरकार सोमवार को सभी अटकलों पर विराम लग गया। केंद्रीय नेताओं और राज्य चुनाव अधिकारियों की मौजूदगी में मनमोहन ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। मनमोहन 2024 के चुनाव में अपनी क्षमता पहले ही साबित कर चुके हैं। 24 चुनावों में राज्य में 24 साल से सत्ता पर काबिज बीजू जनता दल को हार का सामना करना पड़ा। भाजपा की जीत के पीछे मनमोहन की अहम भूमिका रही। अब चर्चा है कि उनके अध्यक्ष बनने के बाद भाजपा के रुके हुए संगठनात्मक कार्यों को और बढ़ावा मिलेगा। मंत्रिमंडल विस्तार के साथ ही विभिन्न राजनीतिक नियुक्तियों में भी तेजी आएगी। इससे पहले मनमोहन नवीन पटनायक के मंत्रिमंडल में बीजद-भाजपा गठबंधन सरकार में कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं। वह भाजपा प्रदेश अध्यक्ष समेत राज्यसभा सांसद भी रह चुके हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023